वर्ष: 2022-23

पल्लवी

अंक-10

कर्मचारी राज्य बीमा निगम उप क्षेत्रीय कार्यालय, मरोल

सत्यमेव जयते

क.रा.बी.नि.
E.S.I.C.

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)

हिन्दी पत्रिका प्रतियोगिता

प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि उप क्षेत्रीय कार्यालय, मरोल की हिन्दी गृह पत्रिका पल्लवी ने वर्ष 2019-2020 में क / ख / ग क्षेत्र से प्रकाशित पत्रिकाओं में से संपादन, साज-सज्जा एवं सामग्री-प्रबंधन के लिए द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

मुख्यालय, नई दिल्ली
दिनांकः

म शर्मा
बीमा आयुक्त

अंक–10

पल्लवी

वर्ष – 2022–23

संपादक मंडल

संरक्षक

श्री पी. सुदर्सनन
प्रभारी उप निदेशक

संपादक

श्री योगेश वडसरा
उप निदेशक

कार्यकारी संपादक

रेणु खरे
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

सम्पादन सहयोग

श्रीमती शालिनी वारियर, भूतपूर्व सहायक निदेशक
आस्था कान्त, सहायक
मुकेश भुर्तिया, सहायक

टंकण सहयोग

श्री वरुण गौड़, अ. श्रे. लि.

कर्मचारी राज्य बीमानिगम

उप क्षेत्रीय कार्यालय–मरोल
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
पंचदीप भवन, प्लॉट नं. पी–09,
रस्ता नं. 07, एम.आय.डी.सी. मरोल,
अंधेरी (पूर्व), मुंबई – 400 093

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
EMPLOYEES'STATE INSURANCE CORPORATION
(Ministry of Labour & Employment, Govt. of India)

पंचदीप भवन, सी.आई.जी. मार्ग, नई दिल्ली–110002
Panchdeep Bhavan, C.I.G. Marg, New Delhi-110002
Tel.: 011-23215487
Website:www.esic.nic.in / www.esic.in

डॉ. राजेन्द्र कुमार
महानिदेशक

संदेश

प्रसन्नता का विषय है कि उप–क्षेत्रीय कार्यालय, मरोल अपनी हिंदी गृह पत्रिका **"पल्लवी"** के 10वें अंक का प्रकाशन करने जा रहा है। पत्रिका के माध्यम से कार्यालय में अधिकारी / कर्मचारी हिंदी से अधिक से अधिक जुड़ते हैं और राजभाषा हिंदी में कामकाज के प्रति और अधिक आकर्षित होते हैं। ऐसे में कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका कार्मिकों को हिंदी के निकट लाने में सेतु का कार्य करती है। आशा है, यह अंक विविध रचनाओं से भरपूर होगा।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मेरी शुभकामनाएँ।

राजेन्द्र कुमार

(डॉ. राजेन्द्र कुमार)
महानिदेशक

श्री पी. सुदर्शनन
प्रभारी उप निदेशक
कर्मचारी राज्य बीमा निगम
उप क्षेत्रीय कार्यालय मरोल

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
EMPLOYEES'STATE INSURANCE CORPORATION
(Ministry of Labour & Employment, Govt. of India)

पंचदीप भवन, सी.आई.जी. मार्ग, नई दिल्ली–110002
Panchdeep Bhavan, C.I.G. Marg, New Delhi-110002
Tel.: 011-23215487
Website:www.esic.nic.in / www.esic.in

दीपक जोशी
बीमा आयुक्त
(कार्मिक एवं प्रशासन तथा राजभाषा)

संदेश

यह सराहनीय है कि अपने अधिकारियों एवं कर्मचारियों की साहित्यिक अभिरुचि की वृद्धि के लिए उप क्षेत्रीय कार्यालय, मरोल अपनी हिंदी गृह पत्रिका **"पल्लवी"** का निरंतर प्रकाशन कर रहा है। पत्रिका का प्रकाशन कार्यालय में राजभाषा हिंदी के प्रति सकारात्मक ऊर्जा एवं वातावरण का निर्माण करता है तथा कार्यालय राजभाषा के लिए निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में अग्रसर होता है। आगामी दसवें अंक के प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

(दीपक जोशी)

श्री पी. सुदर्शनन
प्रभारी उप निदेशक
उप क्षेत्रीय कार्यालय
कर्मचारी राज्य बीमा निगम मरोल

कर्मचारी राज्य विमा महामंडळ
(कामगार आणि रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
EMPLOYEES'STATE INSURANCE CORPORATION
(Ministry of Labour & Employment, Govt. of India)

क्षेत्रिय कार्यालय / क्षेत्रीय कार्यालय / Regional Office
पंचदीप भवन, 108, एन. एम. जोशी मार्ग, लोअर परळ, मुंबई – 400013
पंचदीप भवन, 108, एन. एम. जोशी मार्ग, लोअर परेल, मुंबई – 400 013
Panchdeep Bhavan, 108, N.M. Joshi Marg, Lower Parel, Mumbai & 400 013.
Phone: 02261209700/742, Email: rd-maharashtra@esic-nic-in
Website : www.esic.nic.in/www.esic.in

प्रणय सिन्हा
अपर आयुक्त एवं क्षेत्रीय निदेशक

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि आपके कार्यालय द्वारा गृह पत्रिका के 10 वें अंक का प्रकाशन किया गया है। यह पत्रिका उप क्षेत्रीय कार्यालय मरोल के कार्मिकों की अभिव्यक्ति का उत्कृष्ट माध्यम है। जिसकी सुन्दर प्रस्तुति ने सदैव प्रशंसा पाई है। आशा है, यह अंक भी ज्ञानवर्धक एवं रुचिकर रचनाओं से परिपूर्ण होगा और पाठकों की अपेक्षाओं को पूरा करेगा।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मेरी शुभकामनाएँ।

(प्रणय सिन्हा)
अपर आयुक्त एवं क्षेत्रीय निदेशक

प्रभारी उप निदेशक
कर्मचारी राज्य बीमा निगम
उप क्षेत्रीय कार्यालय मरोल,
प्लाट संख्या 09, मार्ग संख्या–07 एम.आय.डी.सी मरोल
अँधेरी (पूर्व)–400093

संरक्षक की कलम से

"पल्लवी" का 10वां अंक आपके हाथों में सौंपते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है।

गृह पत्रिका किसी भी संगठन के मनोभावों तथा उसकी दृष्टि को प्रतिबिंबित करने का माध्यम होती है। साथ ही यह कार्मिकों की रचनात्मक एवं सृजनात्मक क्षमता को उभारती है तथा उन्हें अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान करती है। मुझे पूरा विश्वास है कि "पल्लवी" का प्रकाशन कार्यालय में राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन में सहायक सिद्ध होगा तथा कर्मचारियों की हिंदी में रूचि को और बढाएगा।

पत्रिका को बेहतर बनाने के लिए आपके सुझावों तथा प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा रहेगी।

– पी. सुदर्सनन
प्रभारी उप निदेशक

संपादकीय

उप क्षेत्रीय कार्यालय, मरोल अपनी हिन्दी गृह पत्रिका "पल्लवी" का दसवां अंक प्रकाशित कर रहा है। मुझे आपसे साझा करते हुए अपार हर्ष हो रहा है कि कार्यालय ने राजभाषा के लिए निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त कर लिया है तथा उसे कायम रखने के लिए कटिबद्ध है। भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन और हिंदी के प्रचार–प्रसार के साथ–साथ क्षेत्र के कार्मिकों की लेखन प्रतिभा की अभिव्यक्ति और कौशल विकास के लिए गृह पत्रिका एक सशक्त माध्यम होती है।

पाठक किसी भी पत्रिका के सबसे अच्छे समीक्षक होते हैं, अतः मेरा निवेदन है कि अपनी प्रतिक्रिया एवं सुझाव अवश्य भेजें। पाठकों की अपेक्षाओं को पूरा करने एवं राजभाषा के उन्नयन के लिए पत्रिका परिवार सतत प्रयत्नशील है।

– योगेश वडसरा
उप निदेशक

अनुक्रम

1.	आस	मुकेश दुबे, ब.का.क	08
2.	हौसला	श्वेता राणा, अधीक्षक	09
3.	सोचता हूँ	अंकित कुमार, अवर श्रेणी लिपिक	10
4.	स्वानुभव–किडनी दान–जीवन दान	श्रीमती विजया सुभाष साठे, पूर्व अधीक्षक	11
5.	काँटों से उपजे फूल	आस्था कान्त, सहायक	15
6.	स्त्री के मन की गाँठ	दीपक यादव (सहायक), बीमा शाखा–III	19
7.	आज़ादी की राह पर	शिखा दुबे, पत्नी श्री राहुल उपाध्याय, सहायक	24
8.	मारीच	रेणु खरे, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी	25
9.	मेरा भारत क्यों महान है	गिरीश मनोहर नायक, प्रवर श्रेणी लिपिक	26
10.	आने वाला कल	अमित कदम, सहायक	28
11.	पर्यावरण	अमित कदम, सहायक	29
12.	मेरी जीवन संगिनी	अनुराग कुमार, नि.श्रे.लि.	30
13.	अब मुझको समझाए कौन	मुकेश कुमार भुर्तिया, सहायक	31
14.	कार्यालय में सत्यनारायण पूजा	राहुल परदेशी, सहायक एवं अंकुश भूयार, सहायक	34
15.	माँ	सुमन प्रजापत, शाखा प्रबन्धक	36
16.	साथ	सुमन प्रजापत, शाखा प्रबन्धक	37
17.	दुल्हन या दहेज	अंकित कुमार, अवर श्रेणी लिपिक	38
18.	संयुक्त परिवार का महत्त्व	अंकित कुमार, अवर श्रेणी लिपिक	39
19.	इयरफोन	मयंक राज, शाखा.प्रबंधक	42
20.	ख्वाब	मयंक राज, शाखा प्रबंधक	43
21.	भ्रष्टाचार : एक घोर बीमारी	आसिमा नाज़, पुत्री श्री तनवीर आलम, सहायक	44
22.	कवच अपनी संतानों के	अमित कुमार, प्रवर श्रेणी लिपिक	45
23.	कण–कण के वासी	मुकेश कुमार दुबे, ब.का.क.	47

पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं, इसमें संपादक मंडल की सहमति आवश्यक नहीं है।

आस

वादियों के दामन में देखो,
फूलों के संग काँटे भी खिलने लगे हैं।
जहाँ होते थे फूलों के गुच्छे,
अब खन्जर से काँटे भी दिखने लगे हैं।

मेरे दिल में जो तेरे प्यार का बना गुलदस्ता था,
ऐसे लगता था जैसे सारा जहाँ हँसता था।
ना हँसी रही वो जहाँ की, ना रहा फुलों का गुलदस्ता
ऐसे भटक रहे हैं इस जहाँ में, जैसे भूल गया है कोई रस्ता।।

चारों तरफ फैली प्यार की ये मदमस्त खुमारी
मेरे मन में तो रह गई है बस याद तुम्हारी।
तुम्हें देखूँ मैं कहाँ, तुम्हें छुऊँ कैसे,
तुम ही बताओ अब तुम बिन मैं और जीऊँ कैसे।।

बीत गया जो ये मौसम भी सर्दी का,
आयी अब जो बसन्त की लाली।
चारों तरफ है मौसम बहार का,
लद गयी है फूलों से पेड़ों की डाली।।

जब तलक ना मिलेगी तू मुझको,
ढूँढता रहूँगा मैं तेरे इश्क को।
कहीं से तो आ के मेरी ज़िन्दगी सँवार जा,
नहीं तो सीने में मेरे एक शूल ही उतार जा।।

बस मेरा दिल है अब जो कहता है मुझसे,
तू आएगी एक दिन, मिलने को मुझसे।
उसी आस में बस जीये जा रहा हूँ,
जख्मों को अपने ही, बस पीये जा रहा हूँ।।

बिना देखे तुझे कहीं खाक ना बन जाऊँ मैं,
बिना मिले तुझे कहीं राख ना बन जाऊँ मैं।
ये जंगल, ये नदियाँ, ये घटाएँ सब वीरान से लगने लगे हैं ,
ये वादियों के दामन में देखो, फूलों के संग काँटे भी खिलने लगे हैं

मुकेश दुबे
ब.का.क

हौसला

तू जोश से उठकर देख ज़रा
कभी तो मंजिल पाएगा
कोशिशों की हद पार कर देख ज़रा
आखिर कितना ठुकराया जाएगा
तू चढ़ते सूरज को आँख खोलकर देख ज़रा
कभी तो झुलसता वो भी बादल में छिप जाएगा
हिम्मत को शक्ति बना कर देख ज़रा
आखिर कितना डराया जाएगा
तू बेड़ियों से खुल कर देख ज़रा
तभी तो आज़ाद कहलाएगा
इस पिंजरे को झंझोड़ ज़रा
आखिर कब तक लोहे को बंदिश बनाएगा
तू विश्वास का पलड़ा देख ज़रा
कभी तो उसे भारी कर पाएगा
साथ की आस तो छोड़ ज़रा
तभी तो आगे बढ़ पाएगा
तू थोड़ा खुद को मान ज़रा
तभी तो नाज़ से सर उठाएगा
दूसरों के दबाने का अर्थ ही क्या
तू अपना मुकाम पाएगा ही पाएगा

श्वेता राणा
अधीक्षक

सोचता हूँ...

सोचता हूँ मैं अक्सर क्या ज़िंदगी यही है।
जिंदगी में सब कुछ भी क्यूं कुछ भी नहीं है।

कहने को तो सारी दुनिया ही अपनी है।
पर क्या इस दुनिया में कोई भी अपना नहीं है।

रिश्ते रह गए हैं बस नाम के दुनिया में।
क्या अपनापन अब कहीं बचा ही नहीं है।

अंकित कुमार
अवर श्रेणी लिपिक

जीवन में उलझन ही उलझन है।
क्या उनका कोई हल नहीं है।

यहाँ लोगों में झूठ फरेब का जोर है।
क्या यहाँ सच्चे लोगों का कोई मोल नहीं है।

माता पिता का हो रहा हर जगह अपमान है।
क्या लोगों में उनके लिए अब सम्मान नहीं है।

हर जगह भाई – भाई में फूट है।
क्या अब उनमें पहले जैसा बंधुत्व नहीं है।

अब सभी के अपने अपने फ्लैट हो गये हैं।
क्या अब पहले जैसा मकान कहीं नहीं है।

हिंदी का प्रश्न स्वराज्य का प्रश्न है।

- महात्मा गांधी

स्वानुभव–किडनी दान–जीवन दान

मैं खुद लेखिका नहीं हूँ, लेकिन मन में तरह–तरह के विचार आने लगे कि जो अनुभव हमारे परिवार को हुआ, क्यों न सबके साथ बाँट लूँ। सच कहा जाए तो इस विषय की शुरुआत वर्ष 2000 से पहले ही हुई है। मेरी सासू माँ की तबियत धीरे धीरे बिगड़ने लगी, पता ही नहीं चल रहा था कि क्या तकलीफ है। इसी कारणवश हमारे परिचित डॉक्टर को बुलाया गया! उन्होंने पूरी तरह जाँच कर कहा कि अभी तो मैं दवाई देता हूँ लेकिन इन्हें बड़े अस्पताल में ले जाकर जाँच करनी पड़ेगी! उनकी सलाह के अनुसार हमने उन्हें मीरा रोड स्थित "भक्ति–वेदांत" अस्पताल में भरती करवाया और जांच पड़ताल में पता चला कि उनकी दोनों किडनी खराब हो गयी हैं और डायलिसिस की जरुरत है और इसके बाद उन्हें डायलिसिस पर रहना पड़ा!

इसी दरम्यान डॉक्टर ने बताया कि उनके सभी बच्चों की सोनोग्राफी करवाना बहुत जरुरी है और जाँच पड़ताल पर पता चला कि दो भाई और बहन इस रोग के शिकार हैं! किसी को भी कुछ तकलीफ नहीं थी लेकिन धीरे–धीरे सभी की किडनी खराब हो जाएगी। परिवार के सभी सदस्य डर गए कि अब क्या करें डॉक्टर ने बताया कि आपकी माँ की किडनी करीबन 69 वर्ष की उम्र में पूरी खराब हुई है! आप लोगों को भी अभी से ख्याल रखना जरुरी है! साल में एक बार आपको सोनोग्राफी करवानी है और डॉक्टर के संपर्क में रहना है! हम सभी ने इस हिदायत का पालन किया!

मेरी सासू माँ एक–डेढ़ साल डायलिसिस सहन कर पाईं और फिर वह चल बसीं! मेरी ननंद को 65 उम्र में और एक देवर को 52 की उम्र में डायलिसिस पर जाना पड़ा एवं वे दोनों ज्यादा दिन इसका सामना न कर सके और दोनों हमें छोड़कर चल बसे! हमारे

घर में मेरी ननंद सबसे बड़ी, फिर मेरे पति सुभाष और देवर सुनील! इन सभी में भाग्यशाली रहे मेरे छोटे देवर महेश जिन्हें कुछ तकलीफ नहीं थी!

मेरे पति सुभाष की किडनी का आकार दिन–ब–दिन बढ़ने लगा और करीबन 24 सेंटीमीटर तक हो गया! किडनी ने अपना रंग दिखाना शुरू कर दिया! हम हमारे डॉक्टर साहब के कहने के अनुसार चल रहे थे तथा खाने पर पाबन्दी का पालन कर रहे थे! डॉक्टर साहब ने हमें बताया कि अब यह वक्त नजदीक आ रहा है कि आपको फिश्टूला यानि कि डायलिसिस की सुविधा करवाके रखना जरुरी है! हम बहुत दुविधा में थे! क्या करें! किडनी प्रत्यारोपण अच्छी तरह हुआ तो कोई बात नहीं लेकिन यह शल्यक्रिया सफल नहीं हुई तो एक हफ्ते में 2 या 3 बार डायलिसिस करना जरुरी होता है! बहुत बड़े संकट में थे हम लोग!

किडनी का काम धीरे धीरे कम ही होता जा रहा था! यह बात सोनोग्राफी और रक्त परिक्षण में सामने आ रही थी! खून में क्रिएटिन की मात्रा बढ़ती जा रही थी! इसकी साधारण मात्रा 1.2 से 1.3 रहनी चाहिए वह बढ़ते बढ़ते 7 के आगे पहुँच गयी! इसी बीच एक बार सुभाष के पेट में दर्द महसूस होने लगा और सूजन हो गई! यह कालावधि कोरोना काल था! मार्च 2021 में डॉक्टर ने वीडियो कॉल पर सुभाष को देखकर सोनोग्राफी की सलाह दी और सोनोग्राफी में किडनी के अंदर रक्तस्त्राव हुआ नज़र आया! डॉक्टर ने कहा आराम कीजिये, यह धीरे–धीरे कम होगा! लेकिन अभी तो किडनी को हाथ नहीं लगा सकते!

इस घटना ने हमें एक तरह का संकेत दिया कि अब हमें जल्द ही कदम उठाने पड़ेंगे! इस घटना के बाद मन में विचारों का भंडार फूटने लगा! दिन–रात यही विचार मन को घेरे रहने लगे! और फिर मन ने निर्णय ले ही लिया कि अगर डायलिसिस के वक्त कुछ हो गया तो किडनी निकालनी पड़ सकती है और तकलीफ बढ़ सकती है तो क्यों न हम किडनी प्रत्यारोपण का विचार करें! यह विचार मन में आते ही थोड़ा सा मन का बोझ हलका हो गया और मन ही मन तय कर लिया कि मेरे पति को मैं ही किडनी दूंगी! मेरा बेटा एवं मेरा छोटा देवर दोनों भी किडनी देने के लिए तैयार हो गए यानी हम 3 लोग तैयार थे! यह बात हमने हमारे डॉक्टर साहब को बताई! डॉक्टर ने कहा, पहले तो तुम तीनों सोनोग्राफी करवालो, फिर देखते हैं! सोनोग्राफी के दौरान यह बात सामने आयी छोटे देवर को एक ही किडनी है! हमारे डॉक्टर ने मेरे बेटे की उम्र कम होने के नाते और घर की जिम्मेदारी होने के कारण मना कर दिया और मुझे उन्होंने किडनी देने के लिए अनुमति दे दी! मैं मन ही मन भगवान को यही प्रार्थना करती थी कि हे भगवान, मेरी ही सब जाँच रिपोर्ट अच्छी आ जाए और मेरी किडनी देने के लायक मैं रहूँ!

शायद यही मन की बात डॉक्टर साहब और भगवान दोनों ने जान ली और फिर इसके बाद सब परीक्षण का सिलसिला शुरु हुआ! मैं आपको सच बताऊँ तो मैं सादी सुई लगाने में भी डरती हूँ! लेकिन इस प्रत्यारोपण के लिए मैं बड़े आत्मविश्वास से हर परीक्षण का सामना करती रही! इसमें मुझे रक्त–परीक्षण, सोनोग्राफी, किडनी की सक्षमता, ईसीजी, अँजियोग्राफी आदि का सामना करना पड़ा! और एक–एक कर मैं किडनी देने के काबिल साबित हुई!

इसके साथ हम परिवार वालों को वकील से बारह प्रकार के शपथ पत्र बनवाने पड़े और जसलोक अस्पताल में हमारे साक्षात्कार (इंटरव्यू), नेफ्रालॉजिस्ट, न्यूरोलॉजिस्ट सर्जन, सरकार की तरफ से पैनल से हुए! मनोचिकित्सक द्वारा भी मेरा साक्षात्कार (इंटरव्यू) लिया गया, जिसमें उन्होंने मुझे बार–बार पूछा कि तुम अपनी इच्छा से यह किडनी दान कर रही हो या कोई जबरदस्ती हो रही है! यह सवाल हर कोई पूछ रहा था! मेरा इन सबको एक की कहना था कि नहीं मैं खुद किडनी दान करना

चाहती हूँ! मुझ पर किसी की जबरदस्ती नहीं है, मैं सिर्फ यह चाहती हूँ कि मेरे पति की तबियत तंदुरुस्त हो जाए! इसी कारणवश मैंने यह निश्चय कर लिया है!

हमारे डॉक्टर ऋषि देशपांडे, नेफ्रोलॉजिस्ट, बड़े कामयाब डॉक्टर हैं, वे हर वक्त हर भेंट में हम दोनों की मानसिकता टटोलते थे और हमें विश्वास दिलाते थे कि आप चिंता न करें, सब ठीक होने वाला है! आपसे ज्यादा मेरी जिम्मेदारी है, आप दोनों की तबियत की और हम दोनों तैयार हो गए किडनी दान एवं प्रत्यारोपण के लिए!

डॉक्टर ने सुभाष को 25.07.2021 को अस्पताल में भरती होने के लिए कहा और मुझे 26.07.2021 को भरती होने के लिए कहा और शल्यक्रिया दिनांक 27.07.2021 की तय हुई!

हम दोनों ने मन ही मन तय किया कि सकारात्मक भाव लेकर ही हम घर से अस्पताल में दाखिल होंगे और यही सोच हमारे लिए बहुत फायदेमंद हुई! 27.07.2021 को सबेरे 8.00 बजे ही हमें ओ.टी. में ले जाया गया! हम दोनों के सर्जन वहाँ मौजूद थे! हमने उन्हें सबेरे की शुभकामना दी! थोड़ी बहुत बातचीत हुई! और फिर हमें ओ.टी. टेबल पर लेटने के लिए कहा गया! फिर उन्होंने फिर से हमारा नाम पूछा, किस कारण आप यहाँ हैं यह पूछा और फिर हम गहरी नींद में खो गए! मेरी आँखें खुलीं तो दोपहर के चार बज चुके थे! पता ही नहीं चल रहा था कि कहाँ हैं हम! बगल के स्ट्रेचर पर मेरे पति लेटे हुए दिखाई दिए और फिर मैं नींद की बाहों में खो गई! करीबन शाम 6 बजे मुझे अपने कक्ष में लाया गया, वहाँ पर मेरे भाई और भाभी दोनों मेरे पास थे! दोनों ने मुझे बताया कि अण्णा (यानि सुभाष) की तबियत ठीक है और आइसोलेशन कक्ष में उनको रखा है! उनसे मिलने की किसी को अनुमति नहीं थी!

मुझ से ज्यादा तकलीफ तो सुभाष को थी! हमारे

रक्त समूह अलग होने के बावजूद डॉक्टर ने किडनी प्रत्यारोपण का निर्णय लिया था! उसमें जो भी जरुरी चिकिसक पूर्तताएँ करनी थीं वह पूरी कर शल्यक्रिया सफल हो गई थी! उनको नाक, मुंह और पैर में कई नलियाँ लगाई गयी थीं और बहुत दर्द सहन करना पड़ रहा था! डॉक्टर आते थे देखते थे, दवाइयाँ, इंजेक्शन चलते रहे!

मुझे दो दिन पानी तक नहीं दिया गया! फिर जाँच पड़ताल पर थोड़े से होठ गीले करने को कहा गया और दो दिन बाद पानी पीने की अनुमति मिली! धीरे –धीरे मेरी तबीयत में सुधार होने लगा, थोड़ा सा उठकर बैठने लगी, अस्पताल में फिजिओथेरेपी भी दी गयी! साँस का व्यायाम तथा थोड़ा सा सहारा लेकर चलना मुझ से करवाया जा रहा था! ऐसे करते–करते मुझे आठ दिन बाद अस्पताल से घर जाने की अनुमति दी गयी! मुझे एक तरफ खुशी थी घर जाने की, लेकिन अस्पताल से निकलते वक्त भी मैं मेरे पति से मिल नहीं पायी! डॉक्टर ने उनके आइसोलेशन कक्ष में जाने से मना कर दिया! बाहर कांच के दरवाजे से ही हाथ दिखाकर अलविदा किया!

सुभाष के शरीर में दर्द बहुत था, साँस फूलती थी! खाना नहीं जा रहा था! पेट साफ नहीं हो रहा था! इसी कारणवश उनकी तबियत ठीक नहीं थी! दिन गुजरते गए! पन्द्रह दिन बीत गए लेकिन तकलीफ तो थी ही! डॉक्टर ने कहा कि अभी ठीक है, घर ले जा सकते हैं! लेकिन सबके मन में डर था कि घर लाने पर कुछ तकलीफ हुई तो डॉक्टर साहब ने समझाया कि घर जाने पर उन्हें ज्यादा अच्छा महसूस होगा! और एक दिन छोड़कर जाँच के लिए आना है!

इस तरह हमारा किडनी दान एवं प्रत्यारोपण बहुत अच्छी तरह हो चुका था! हम दोनों की तबियत बिलकुल दुरुस्त है लेकिन फिर भी सुभाष को महीने में एक बार रक्त परीक्षण की रिपोर्ट नेफ्रालॉजिस्ट

को दिखाकर उनकी सलाह के अनुसार दवाइयों में बदलाव करना पड़ता है!

इस चिकिसक शल्यक्रिया में हमें हमारे परिवार से काफी मदद मिली! मेरे दोनों भाई–भाभी, मेरे बेटा–बहु, मेरी देवरानी इन सभी ने बहुत हमारी देखभाल और सहायता की जिसके कारण हम आज खुश और आत्मनिर्भर हैं!

इसी अनुभव के आधार पर मेरे पति श्री सुभाष साठे, ने फॉर्चून फेवर्स द ब्रेव नामक किताब भी लिखी! इस किताब की हमारे डॉक्टर, सभी परिचितो ने बहुत सराहना की। यह किताब क्षेत्रीय कार्यालय मुम्बई, उप क्षेत्रीय कार्यालय मरोल, के पुस्तकालय में भी पढ़ने के लिए मौजूद है!

श्रीमती विजया सुभाष साठे
पूर्व अधीक्षक

काँटों से उपजे फूल

आस्था कान्त
सहायक

मेरे काँटों से उपजे हैं तेरे फूल
तेरी पंखुड़ियों में चुभन बहुत होगी

बंधे हैं ये रिश्ते बड़ी ज़िदों से
इन पुश्तों मे उलझन बहुत होगी

क़ाफ़िया मिलता नहीं मेरे शेरों को
मेरी गज़लों मे खलल बहुत होगी

कड़ी धूप से गुजरना पड़ता है सबको
तेरी रहगुज़र-ए-रहाइश के दरख़्तों में पत्तियाँ कम बहुत होंगी

मुंतज़िर आज भी हैं लोग जवाब-ए-ख़त के लिए
शायद तेरे बदल जाने में रफ्तार बहुत होगी

बैठे रहते हैं दहलीजों पर, एक तेरी इनायत के लिए
'आस' उन्हें पा लेने की हर बार बहुत होगी ।।

(रहगुज़र-ए-रहाइश - निवास की ओर जाने वाला रास्ता, मुंतज़िर - प्रतीक्षा करने वाला)

हिन्दी में संयुक्त वर्ण

हिन्दी में वर्णों को संयुक्त करना अर्थात् एक अक्षर को दूसरे अक्षर के साथ मिलाना विविधता–पूर्ण है। जैसे – पक्का, पक्का, रद्द, रद्द। इस समस्या पर विचार करते हुए वर्णों के आकार को आधार माना गया।

देवनागरी में अक्षरों के आकार तीन प्रकार के हैं। खड़ी पाई (ा) से अंत होने वाले अक्षर जैसे, ग घ; आधी खड़ी पाई से अंत होने वाले अक्षर जैसे क, फ और बिना पाई वाले वर्तुलाकार अक्षर जैसे ट, द, आदि। इन तीनों को अपने परवर्ती अक्षरों से मिलाने की तीन विधियां हैं–

(क) जिन अक्षरों का अंत खड़ी पाई से होता है उन्हें परवर्ती अक्षर से मिलाते समय खड़ी पाई हटा दी जाती है जैसे– ख्यात, ग्यारह, विघ्न, बच्चा, छज्जा, नगण्य, पत्ती, स्वास्थ्य, ध्वनि, न्यास, प्यास, डिब्बा, सभ्य, रम्य, उल्लास, व्यास, श्लोक, राष्ट्र, यक्ष्मा, त्र्यंबक आदि।

(ख) आधी खड़ी पाई से अंत होने वाले अक्षरों को अगले अक्षर से मिलाते समय आधी खड़ी पाई को हटा देते हैं जैसे– पक्का, दफ्तर।

(ग) वर्तुलाकार अक्षरों ङ,छ,ट,ठ,ड,ढ,द और ह को संयुक्त करते समय इन अक्षरों के नीचे हल चिह्न लगाया जाए। वाङ्मय, छुट्टी, बुड्ढा, रद्द, चिह्न, ब्रह्मा आदि।

(घ) संयुक्त 'र' के तीनों रूप यथावत् रहेंगे जैसे प्रकार, धर्म, राष्ट्र।

(ङ) श्र प्रचलित रूप में ही रहेगा इसे श के रूप में नहीं लिखा जाएगा। त् और त्र दोनों रूप मान्य हैं। क्र को इसी रूप में लिखा जाएगा

(च) हिन्दी में इ (ि) की मात्रा एक समस्या है। यह किसी अक्षर से पहले (बायीं ओर) लगाई जाती है। यदि देवनागरी के बारे में कहा जाता है कि इसमें जैसे बोला जाता है उसी तरह लिखा जाता है तो इ (ि) को अक्षर के दायीं ओर लिखना चाहिए अन्यथा पढ़ते समय उसका उच्चारण अक्षर से पहले करना

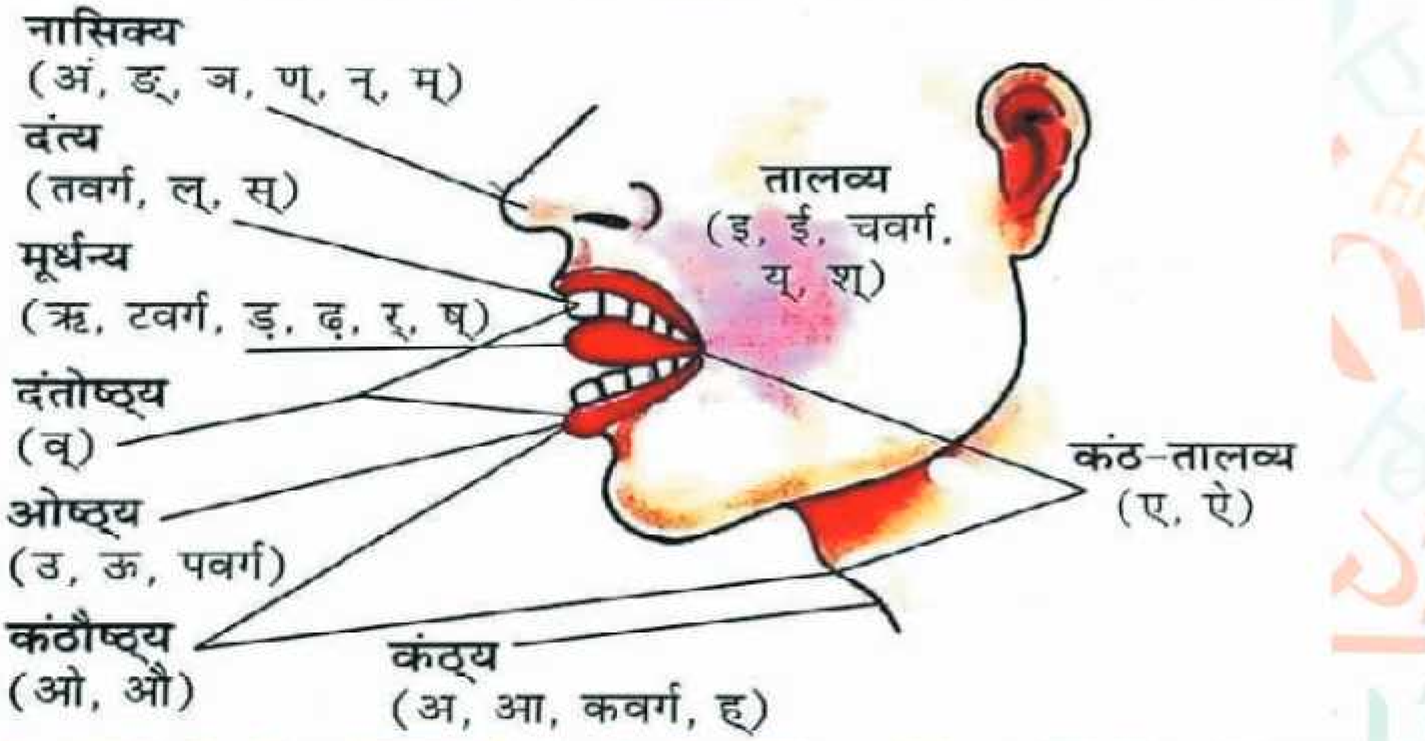

पड़ेगा। किन्तु अक्षर के दाईं ओर दीर्घ ई (ी) की मात्रा होती है। इसलिए यह देवनागरी की लिपिगत विवशता है कि 'ि' की मात्रा को बाईं ओर अर्थात् अक्षर से पहले लिखा जाए। हल् चिह्न युक्त अक्षर से बनने वाले संयुक्ताक्षरों के मामले में यह स्थिति और चिंताजनक है। इसमें 'ि' की मात्रा का प्रयोग अंतिम व्यंजन के साथ ही किया जाएगा, सभी संयुक्त व्यंजनों के पूर्व नहीं। जैसे कूट्टिम, द्वित्तीय, बुद्धिमान, चिह्नित आदि। इन्हें कुट्टिम, द्वितीय, बुद्धिमान, चिहिन्त, रूप में नहीं लिखा जाएगा ।

व्यंजन

व्यंजन उन ध्वनियों को कहते हैं जिनके उच्चारण में वायु मुख से बाहर निकलने में बाधित होती हो अर्थात मुख के किसी भाग से टकराकर बाहर आती हो। व्यंजनों का उच्चारण करते समय मुखावयव में यथास्थिति आंशिक या पूर्ण अवरोध होता है, फिर भले ही काकल में अवरोध हो या नहीं।

व्यंजन	उच्चारण का स्थान और प्रयत्न
क ख ग घ ङ	मृदु तालव्य / कंठ्य स्पर्श
च छ ज झ ञ	तालव्य स्पर्श
ट ठ ड ढ ण	मूर्धन्य स्पर्श
त थ द ध न	दंत्य स्पर्श
प फ ब भ म	(द्वि) ओष्ठ्य स्पर्श
य र ल व	पंरपरागत शब्दावली में 'अर्धस्वर'
श ष स ह	उष्म / ऊष्म या संघर्षी व्यंजन
ड़ ढ़	मूर्धन्य ताड़ित व्यंजन

टिप्पणी:

1 उपर्युक्त व्यंजन वर्णों में 'अ' अंतर्निहित स्वर है।

2 प्रत्येक वर्ग में दूसरा और चौथा व्यंजन 'महाप्राण' है जबकि शेष तीनों व्यंजन 'अल्पप्राण'।

3 प्रत्येक वर्ग में पहला और दूसरा व्यंजन 'अघोष' है, जबकि शेष तीनों व्यंजन 'घोष' हैं।

4 प्रत्येक वर्ग का पाँचवाँ व्यंजन 'नासिक्य' है क्योंकि इसमें मुखविवर के साथ –साथ नासिका विवर से भी हवा बाहर निकलती है। इन पाँचों नासिक्य व्यंजनों में से प्रथम तीन हिन्दी शब्दों के आरंभ में नहीं आते।

5 ट वर्ग भारतीय भाषाओं की विशेषता है। (यानी मूर्धन्य व्यंजन) ये व्यंजन यथावत् अंग्रेजी में प्रयुक्त नहीं होते।

6 पंरपरागत 'अर्धस्वर' के अधीन परिगणित चारों व्यंजन य, र, ल, व, में से पहला व्यंजन 'य' विशुद्ध अर्धस्वर है, जबकि 'व' किसी पूर्ववर्ती व्यंजन के साथ उच्चरित होकर 'अर्धस्वर' बन जाता है। जैसे 'स्वर या 'अनुस्वार जैसे शब्दों में 'व'।

7 'ष' का लिखित प्रयोग केवल तत्सम शब्दों में ही होता है। हिन्दी में इस व्यंजन का उच्चारण 'श' जैसा ही होता है।

8 ड़ और ढ़ हिन्दी के विशिष्ट उच्चारण वाले व्यंजन हैं। संस्कृत में इनका उच्चारण नहीं होता।

9 क्ष, त्र, ज्ञ, और श्र, भले ही वर्णमाला में दिए जाते हैं किंतु ये एकल व्यंजन नहीं हैं।

10 कुछ अरबी– फारसी और अंग्रेजी उच्चारण वाले गृहीत शब्द व्यंजन वर्ण के नीचे नुक्ता लगाकर लिखे जा रहे हैं। ये हैं –: क़, ख़, ग़, ज़ और फ़।

11 मराठी ळ – इस का उच्चारण 'मानक हिन्दी' में नहीं होता। हाँ, यह उच्चारण हिन्दी की कुछ बोलियों जैसे हरियाणवी, राजस्थानी आदि में अवश्य सुनाई पड़ता है। इस व्यंजन के उच्चारण को परिवर्धित देवनागरी' में स्थान दिया गया है ताकि मराठी सहित दक्षिण भारत की भाषाओं आदि के और हिन्दी की बोलियों के लिप्यांकन में इस उच्चारण को 'परिवर्धित देवनागरी के माध्यम से सही रूप में व्यक्त किया जा सके।

> *हिन्दी पढ़ना और पढ़ाना हमारा कर्तव्य है. उसे हम सबको अपनाना है.*
>
> *- लालबहादुर शास्त्री*

राजभाषा पखवाड़ा समापन समारोह

स्त्री के मन की गाँठ

"तन के भूगोल से परे
एक स्त्री के
मन की गाँठे खोलकर
कभी पढ़ा है तुमने
उसके भीतर का खौलता इतिहास?
पढ़ा है कभी
उसकी चुप्पी की दहलीज़ पर बैठ
शब्दों की प्रतीक्षा में उसके चेहरे को?
अगर नहीं।
तो क्या जानते हो तुम
रसोई और बिस्तर के गणित से परे,
एक स्त्री के बारे में ...?

'निर्मला पुतुल'

कोई भी विचार निर्वात में पैदा नहीं होता। उसके जन्म के पीछे उस विचार के पीछे का इतिहास, उस समय के समाज, भूगोल, संस्कृति आदि में कुछ ऐसी परिस्थितियाँ होती हैं जिनके घात–प्रतिघात से विचार का बीजारोपण होता है। ऐसा ही एक विचार है कि नारी के मन में क्या है? नारी क्या चाहती है? क्यूँ समाज में नारी के मन से संबन्धित मुहावरों व लोकोक्तियों का प्रचलन है? जैसे–नारी रहस्य का सिंधु है, विधिहु न नारि हृदय गति जानी (तुलसीदास)' आदि। क्यों नारी के मन की परतों को समझना मुश्किल है? क्यों आज का पुरुष इस आधुनिक समाज में नारी को अपने समक्ष खड़ा नहीं कर पा रहा है? यदि इन प्रश्नों पर चिंतन, मनन, और मंथन किया जाए तो आधुनिक समाज को अन्य अर्थों के साथ लैंगिक रूप से सभ्य मानने में हिचकिचाहट महसूस होती है।

अब सबसे पहले हम यह समझने का प्रयास करेंगे कि क्यों नारी या स्त्री या महिला शब्द का उच्चारण होते ही एक 'मनुष्य' का नहीं अपितु शारीरिक रूप से भिन्न मूर्त का एहसास होता है। दरअसल दो

समाजशास्त्रीय शब्दों 'जेंडर और सेक्स के अर्थ में इसे देखा जा सकता है जहाँ 'सेक्स एक जैविक अवधारणा है वहीं 'जेंडर एक समाजशास्त्रीय अवधारणा। जब एक भिन्न शरीराकृति होने के आधार पर अमुक वर्ग के लिए भिन्न मानक निर्धारित करते हैं तो इसे लैंगिक पूर्वाग्रह कहा जाता है। उदाहरण स्वरूप नारी का कार्य है– घर की प्रतिष्ठा बढ़ाना, बच्चों का लालन–पालन करना, अपने पति की सेवा करना आदि। आगे चलकर इन्ही पूर्वाग्रहों

से 'पित्रसत्तात्मकता' 'पित्रस्थानिकता', 'पित्रावंशीयता' जैसी अवधारणाएँ विकसित हुईं जो आज नारी समस्या की मूल जड़ हैं।

लैंगिक पूर्वाग्रह यों ही नहीं बने हैं। समाजशास्त्रियों के अनुसार प्रारम्भ में स्त्री की 'प्रस्थित' पुरुष की अपेक्षा उच्च थी किन्तु संतान जनने का प्राकृतिक गुण होने के कारण स्त्री पर शारीरिक बन्दिशें लगीं। उसकी अपनी संतान के लालन–पालन की जिम्मेदारी में सुरक्षा का कार्य पुरुष के हाथ में आया। इसी कार्य ने पुरूष–सत्ता को जन्म देकर उसकी (पुरूष) प्रस्थिति को उच्च बनाया। प्राचीन सभ्य समाजों में जहां यूनान में सेफो जैसी महिला चिंतक मौजूद थीं तो वहीं भारतीय वैदिक समाज में गार्गी, मैत्रेयी, लोपमुद्रा, कपिला जैसा विदुषियाँ पुरुषों के कंधे से कंधा मिलाकर चल रही थीं। किन्तु समय के साथ पुरुष की बढ़ती सत्ता ने जहाँ भारत में जाति–व्यवस्था जैसी प्रथाओं को जन्म दिया तो वहीं पश्चिमी समाजों में भी नारी को पुरुषों की छाया तले खड़ा कर दिया।अरस्तू जैसे महान चिंतकों ने भी नारी की स्थिति को दोयम दर्जे का मानकर उसमें विवेक जैसे गुणों के अभाव की बात की।

उपर्युक्त विशद चर्चा से हमें आज के समाज में यह स्थापित करने में मदद मिलेगी की नारी की स्थिति, कार्य, स्वभाव वैसा नहीं है जैसा कि आम–पुरुष द्वारा उसे समझा जाता है। जैसे कि सुमित्रानंदन पंत ने कहा है–

"योनि नहीं है रे नारी, वह भी मानवी प्रतिष्ठित,
उसे पूर्ण स्वाधीन करो, वह रहे न नर पर अवसित।"

अब प्रश्न यह उठता है कि किन–किन स्तरों पर नारी को एक शरीर मात्र समझा जाता है। सर्वप्रथम, परिवार के स्तर पर एक लड़की का लालन पालन (सुधार जो भी है वह ऊंट के मुंह में जीरा के समान है) केवल गृहकार्यों को करने वाले जीव के तौर पर किया जाता है। 'समाजीकरण' की प्रक्रिया में उसे एहसास कराया जाता है कि वह केवल पुरुष के अधीन है। वस्तुतः विवाह प्रथा में जो पित्रास्थानिकता का तत्व है वह भी स्त्री को पुरुष का पिछलग्गू साबित करता है। यहाँ तक कि अपने ससुराल में भी उसे सबकी इच्छाओं के अनुरूप स्वयं को ढालना पड़ता है। तुलसीदास ने रामचरितमानस में सीता को आदर्श पत्नी दिखाया है क्योंकि वह अपनी सास की देखभाल समुचित रूप में करती है–

"कौशिल्यादि सासु घर माहीं।
सेवहिं सबन्हि याद मन माहीं।"

इतनी सेवा और पति के वन गमन के समय सभी राजसी सुख–सुविधाओं की त्यागकर अपने पति के साथ पतिव्रता धर्म के पालन करने के उपरांत भी रावण के द्वारा हरण करने के पश्चात वहाँ से छुड़ाए जाने पर सीता (जोकि अनेकों यातनाओं को झेलकर आई थी) को ही 'अग्निपरीक्षा' तक से गुजरकर अपने चरित्र के पवित्र होने का प्रमाण देना

पड़ता है। (वाल्मीकि रामायण युद्ध कांड)

इसी प्रकार समाज के स्तर पर जाति–व्यवस्था में विद्यमान 'शुद्धता एवं प्रदूषण की संकल्पना' घर की बेटियों, बहुओं को घर की चौखट तक सीमित करती है। उनका घर से बाहर निकलना, स्वतंत्र घूमना, प्रेम करना समाज में अपमान समझा जाता है। आधुनिक समय में 'ऑनर किलिंग की समस्या इसी व्यवस्था की परिणिति प्रतीत होती है।

इतनी बन्दिशों के बाद भी यदि कोई स्त्री कार्य करने पहुँच भी जाती है तो बाहर के लोग, कार्यस्थल के सहकर्मी उसे ललचाई नजरों से देखते हैं क्योंकि उनकी नजरों में वह एक सहकर्मी नहीं बल्कि 'सेक्स की पूर्ति का साधन मात्र है। किसी शायर ने इसपर लिखा है –

"औरतें काम पर निकलीं, बदन घर पर रखकर
कि जिस्म जो खाली मिला, तो मर्द आ बैठे।"

अब यदि इन कुटिल नजरों से बच भी जाए तो कहीं न कहीं वह कार्यस्थलों पर यौन–शोषण का शिकार हो जाती हैं – चाहे वह ऑफिस हो, परिवहन साधन हो या मजदूरी की जगह। 2016 में आई फिल्म 'पिंक में भी इसी बात को दर्शाया गया है कि किस प्रकार एक स्त्री का पुरुष के साथ बैठकर, हँसकर बात करने को भी शारीरिक संबंध बनाने का इशारा समझ लिया जाता है।

इस पर हर स्तर पर नारी का 'वस्तुकरण' किया जाता है। परिवार में उसे केवल माँ, बहन, बेटी,

पत्नी की पहचान मिलती है, मानव की क्यों नहीं? पंचायतों में आरक्षण मिला तो सरपंच की कुर्सी पर सरपंच पति आ बैठे। स्त्री के बारे में ऐसी बातों से एक ओर जहां पुरुषों में सामंती मूल्यों का प्रदर्शन होता है, वहीं दूसरी ओर वह बात नारी की स्थिति को भी पुरुषों की नजर में बयान करती है। जब नारी हँसती है तो इसे हम–बिस्तरी का इशारा समझा जाता है। सोशल मीडिया के स्तर पर जब कोई लड़की/महिला किसी लड़के/पुरुष की तस्वीर में रुचि दिखाकर 'लाइक' करती है तो इसे 'संभोग करने का खुला निमंत्रण समझा जाता है। आज के सिनेमा में नारी के संबंध में, उसके अंग प्रदर्शन के साथ जो फूहड़ गाने सुने जाते हैं वे हमारे समाज की मानसिकता को ही उजागर करते हैं। आज इंटरनेट पर जो विज्ञापन आते हैं उसमें महिला का अंग प्रदर्शन (मुख्यतः सौंदर्य प्रसाधन–परफ्यूम आदि) दिखाया जाता है ताकि लोग ज्यादा आकर्षित हों। ऐसी इसलिए कि 'मुन्नी–बदनाम' जैसे गाने आते ही उनका हिट होना संभावित हो जाता है।

ये उदाहरण यह साबित करते हैं कि आज के सभ्य समाज की सच्चाई क्या है। हमने स्वतन्त्रता आंदोलन से नारियों के पक्ष में अनेक कार्य किए, योजनाएँ लाए, नीतियाँ बनाईं, कार्यक्रम चलाए। पर क्या ये सशक्तिकरण लाना चाह रहे थे जो सिर्फ महिला को सशक्त करता है, पुरुष मानसिकता को नहीं। क्या कोई पुरुष समझेगा कि महिलाएं क्या चाहती हैं–

"उसके चेहरे में बसी है एक पीड़ा
जब वो हँसती है तो वह और उभर आती है
कितना कम जानता हूँ उसे
नहीं! उस चेहरे को नहीं। उस पीड़ा को"

महिलाएँ क्या चाहती हैं? इनके मन की गाठों में क्या है? उनका मनोविज्ञान क्या है? इन सभी सवालों के जवाबों को ढूँढने का प्रयास करेंगे तो उनके विचार सामने आएँगे। पुरुषों का जवाब उनके अनुरूप होगा, एक निरक्षर महिला का जवाब अलग होगा तो एक पढ़ी–लिखी शिक्षित महिला का जवाब इससे हटकर होगा। पश्चिम में मध्यकाल से आधुनिक काल के मध्य संक्रमण में अनेक विचारकों ने 'नारी' के पक्ष में अनेक बातें कहीं हैं। जे. एस. मिल ने अपने लेख– 'सब्जेक्शन' ऑफ विमेन' मैरी वॉल्सन–क्राफ्ट ने 'ए विंडीकेशन ऑन द राइट ऑफ विमेन' सिमोन द बोउवा ने अपनी पुस्तक 'द सेकंड सेक्स' आदि के द्वारा यह बताने का प्रयास किया है कि नारी किसी मात्रा में पुरुषों के अधीन, कमतर या भिन्न नहीं है। उसमें भी वही सारे गुण विद्यमान हैं जो कि एक पुरुष में होते हैं। नारी की इच्छाएँ व आकांक्षाएँ भी पुरुषों के समान ही होती हैं। अनेक रिसर्चों ने यह प्रमाणित किया है कि कई मानकों पर महिलाएँ पुरुषों से उच्चतम स्थिति में होती हैं जैसे– शारीरिक सहनशीलता, भावनात्मकता, बुद्धिमत्ता जैसे गुणों में।

इन सभी विचारकों के विचारों का संयोजन करके यह बताना पड़े कि नारी के मन की गांठों में क्या है तो मेरे विचार से शायद हमारे देश का संविधान इस प्रश्न का अधिक अच्छा उत्तर दे पाएगा –

"वे चाहती हैं कि उन्हे 'हम भारत के लोग' की तरह मानव समझा जाए। उन्हें विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म, उपासना की 'स्वतन्त्रता' दी जाए। उन्हें भी प्रतिष्ठा व अवसर की 'समता' प्रदान की जाये। उन्हें भी राष्ट्र की एकता, अखंडता व बंधुत्व में स्थान मिले। अनुच्छेद– 42 के तहत उन्हें संतान जन्म देने के संबंध में सुविधाएँ मिले तो अनुच्छेद– 39 के तहत समान कार्य के लिए समान वेतन। वे चाहती हैं कि कोई भी नागरिक औरतों के शील का अपमान न करे।" यशपाल ने अपने उपन्यास 'दिव्या' में चरित्र दिव्या के माध्यम से यही कहलवाया है कि नारी 'अन्योन्याश्रय' (परस्पर निर्भरता) चाहती है।"

तुलसीदास ने भी कहा है –

" कत बिधि सृजीं नारि जग माहीं।
पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं।"

इस प्रकार किसी महिला के ये सभी स्वप्न या अधिकार पूरे करने के लिए हमें न सिर्फ महिला सशक्तीकरण की राह पर आगे बढ़ना होगा बल्कि पुरुषों में भी नारी के प्रति संवेदना के तत्वों का समावेश करना होगा। केवल कानूनों को कठोर करके ही नहीं बल्कि समाज के स्तर पर जड़ों के रूप में पैठ बनाए पित्रसत्तात्मकता के मूल्यों को चुनौती देनी होगी। इन्हीं व्यवहारों को परिवर्तित करने के लिए जागरूकता अभियान चलाना, जन आंदोलन चलाना जैसे उपाय यदि किए जाएँगे तभी ये सारे प्रयास सफल हो पाएँगे। इसके लिए आशा के दीप जलाए रखकर अथक प्रयासों के द्वारा ही इन लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सकता है–

"इस नदी की धार में ठंडी हवा आती तो है,
नाव जर्जर ही सही, लहरों से टकराती तो है।
एक चिनगारी कहीं से ढूंढ लाओ दोस्तों
इस दिए में तेल से भीगी हुई बाती तो है।"
'दुष्यंत कुमार'

दीपक यादव (सहायक)
बीमा शाखा–III

परदेशी वस्तु और परदेशी भाषा का भरोसा मत रखो अपने में अपनी भाषा में उन्नति करो।

- भारतेंदु हरिश्चन्द्र

आज़ादी की राह पर

आजादी की 75वीं वर्षगाँठ पर,
इतिहास की कुछ बात करते हैं।
जिनके कारण सब मुमकिन हो पाया,
आज उन्हें चलो याद करते हैं ।।
बहुत सुनहरा था वो क्षण,
जब अपना भारत आजाद हुआ।
सत्य अहिंसा की ताकत का,
महत्व भी सबको ज्ञात हुआ।।
हैं शब्द नहीं बतलाने को,
उन वीरों ने क्या—क्या काम किया।
भारत माँ के सम्मान की खातिर,
अपना सब—कुछ दान दिया।।
रक्त – तिलक माथे पर लगाकर,
चल निकले, आजादी की राह पर।
जान लुटा बैठे देश की खातिर ,
निकली ना उनकी ''आह'' पर।।
दृढ़ संकल्प था उनका,
और खुद पर विश्वास था।
भारत माँ पर न्योछावर करने को,
तैयार उनका हर श्वास था।।
हिंदू, मुस्लिम, सिक्ख थे भाई।
एकजुट होकर लड़ी सभी ने,
आजादी की ये बड़ी लड़ाई ।।
तब जात—पात का भेद भुलाकर,
सबने सबका साथ दिया।
सत्य अहिंसा के पथ पर चल,
बस मानवता को याद किया ।।
कोटि कोटि है प्रणाम उन्हें,
जिन वीरों ने ये आजादी दिलवाई।
मत भूल जाना कभी उन्हें,
हमारे कल के लिए अपनी जान गँवाई।।
उन वीरों के बलिदानों को,
तुम व्यर्थ नहीं जाने देना।
कोशिश करना इतनी कि देश पर,
कभी आँच नहीं आने देना।।

शिखा दुबे
पत्नी श्री राहुल उपाध्याय, सहायक

मारीच

रेणु खरे
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

अनुमति नही मुझे
कि आकांक्षाओं को विस्तार दूँ
पंख दूँ उन्हें
नभ छू लेने दूँ...
नया पथ चुन लिया मैंने
सीमित को असीम कर लिया मैंने
हाँ, मन मयूर के पंख कटे हैं
बिखरे हैं,
मेरी भग्नाषाओं की तरह
चुन कर सहेज लिया है मैंने
मारीच का पीछा ना किया
लांघी नहीं कोई सीमा मैंने,
पर यह क्या
कहानी ही बदल गई
कुटिया में घुटकर मैं रह गई
ना राम लौटे न रावण ही आया
ना असत्य टूटा ना सत्य पाया
क्या स्वर्णमृग की आकांक्षा
किसी पूर्णता का द्वार है
कुंठित हो जीना
किसी शुभ-संभावना पर प्रहार है,
तो श्रेयस्कर क्या है
लक्ष्मण रेखा में सिमटकर
रावण की मुक्ति औ
विजय दिवस की राह की बाधा बनूँ
या पंख फैला कर उड़ूँ
और मारीच का पीछा करूँ।।

(रियाज़ रेट्रो पॉडकास्ट के एपिसोड से प्रभावित)

मेरा भारत क्यों महान है

सभी क रा बी नि कर्मचारियों को नमस्कार। जैसा कि हम सभी जानते हैं कि हाल ही में हमने पचहत्तरवें स्वतंत्रता दिवस का अमृत महोत्सव पूरे देश में बड़े धूम– धाम से मनाया था। पिछले सभी वर्षों में मनाए गए स्वतंत्रता दिवस समारोहों से अत्यधिक सुन्दर और ख़ास 2022 का स्वतंत्रता दिवस होना चाहिए, इसलिए देश में हर घर तिरंगा अभियान की सुन्दर योजना रखी गई जिसमें प्रत्येक घर, दफ्तर, हर गली –मोहल्ले इत्यादि में तिरंगा ध्वज लहराने का आव्हान किया गया था।

हमारे उप क्षेत्रीय कार्यालय मरोल में भी सभी कर्मचारियों को कपड़ों के बने बहुत ही सुन्दर ध्वज

बाँटे गए , जिसे सभी कर्मचारियों ने बड़े गर्व और सम्मान से स्वीकारा, और ध्वजों के साथ अपने सहकर्मियों, मित्रों और परिवार के सदस्यों के साथ लिए गए फोटोज को बड़ी शान से सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर डाला। इस कार्य को हमारे ऑफिस के स्तर पर सफल बनाने के लिए उप. निदेशक (प्रभारी) और सामान्य शाखा का मनःपूर्वक धन्यवाद। हम सभी भारतीय नागरिकों को अपने भारतीय होने पर गर्व है , हर भारतीय कहता है कि ' I am proud to be an Indian' । मैं भी बड़े गर्व से कहता हूँ कि मुझे भी भारतीय होने का गर्व है और मैं क्यों गर्व करता हूँ यह बताने का प्रयास कुछ शब्दों में करना चाहता हूँ।

शायद ही विश्व में कोई ऐसा देश होगा जिसकी संस्कृति भारत जितनी विविध और विभिन्न रीति–रिवाजों, विचारों और सामाजिक मान्यताओं से युक्त हो। आप ही सोच कर देखें – कहाँ पंजाब, कहां तमिलनाडु, कहाँ महाराष्ट्र कहाँ बंगाल, कहाँ कर्णाटक, कहाँ बिहार, कहाँ केरल और कहाँ राजस्थान। कहने का तात्पर्य यह है कि इन प्रांतो की भाषाएँ अलग, खान–पान अलग, पोशाक अलग और देश में 28 राज्य और 8 केंद्र शासित प्रदेश होने के बावजूद हम मिल–जुल कर रहते हैं ।

इसका सबसे अच्छा उदाहरण हमारा उप क्षेत्रीय कार्यालय मरोल ही है जहाँ हर एक प्रांत के लोग जैसे मराठी, दक्षिण भारतीय, उत्तर भारतीय, गुजराती, राजस्थानी, उत्तर–पूर्व क्षेत्र इत्यादि जगहों से वास्ता रखते हैं और बिना किसी भेद भाव, उँच–नीच की भावना न रखते हुऐ हम आपसी भाईचारे और मित्रता का उत्तम उदहारण प्रस्तुत करते हैं और अपने कर्तव्यों का श्रद्धापूर्वक पालन करते हैं।

भारत पर 200 साल शासन करके, सब कुछ लूटकर जब 1947 में हमारे वीर क्रांतिकारियों के त्याग और बलिदान की वजह से भारत को स्वतंत्रता मिली, तब

सोने की चिड़िया कहलाने वाले भारत को अंग्रेज लगभग कंगाली और लाचारी की अवस्था में छोड़ वापस ब्रिटेन लौट गए थे। हमारे भारत के लौह पुरुष श्री सरदार पटेल की बुद्धिमत्ता के चलते और कई सालों की मेहनत के बाद कई राज्यों को सफलतापूर्वक भारत गणराज्य में जोड़ा गया। पश्चिम के कई राजनीतिक विशेषज्ञों /विद्वानों की यह मान्यता थी कि यदि भारत को जोड़ा भी गया तो वह कुछ ही वर्षों के भीतर टूट कर बिखर जाएगा क्योंकि भारत की संस्कृति बहुत ही विविध है और विभिन्न रीति–रिवाजों, विचारों के लोगों के बीच एकता नहीं बनी रह सकती। परन्तु उनकी भविष्यवाणी गलत निकली और आज भारत की एकता पहले से ज़्यादा अटूट और मज़बूत है। सरदार पटेल यदि वो महान कार्य ना करते तो शायद इक्कीसवीं सदी का भारत और उसकी भौगोलिक स्थिति एवं नक्शा कुछ और ही होता।

आज़ादी मिलने के समय औद्योगीकरण नाममात्र था और भारत का भविष्य भगवान के हाथों में था। यह बात सत्य है कि भारत में आज भी गरीबी, कुपोषण, अधिक जनसंख्या जैसे सामाजिक मुद्दे हैं तथा इन तथ्यों को नकारा नहीं जा सकता परंतु मात्र पचहत्तर वर्ष के भीतर भारत लगभग हर क्षेत्र जैसे विज्ञान, अंतरिक्ष विज्ञान, शिक्षा, कृषि उत्पाद, मनोरंजन, खेल इत्यादी में उत्कृष्टता प्राप्त कर चुका है। भारत की ख्याति विश्व के गिने– चुने परमाणु शक्ति वाले देशों में होती है। हाल ही में भारत ब्रिटैन को पीछे छोड़ दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में सामने आया है।

भारत में हमेशा समृद्ध संस्कृति का इतिहास रहा है और इसे सोने की चिड़िया कहा जाता था। यह तो एक बहुत बड़ा दुर्भाग्य था कि ऐसे महान देश को हजारों वर्षों की ग़ुलामी और यातनाएँ सहनी पड़ीं और सब कुछ लूटने के बाद अंग्रेज़ों द्वारा इसे मात्र सपेरों का देश कहा गया, पर वास्तविकता में हमारा देश सपेरों का नहीं बल्कि वीरों, संतों और महात्मओं का देश है। ये देश हमारी जन्मभूमि है और हमने इसे माता का दर्ज़ा दिया है, इसके चलते हम सभी भारतियों को इस वर्ष प्रतिज्ञा लेनी चाहिए कि भारत में एकता, भाईचारा और इंसानियत के भावों का निर्माण करके इसे फिरसे सोने की चिड़िया बनाएँगे।

गिरीश मनोहर नायक
प्रवर श्रेणी लिपिक

आनेवाला कल

हम सबको इस जीवनकाल में हमेशा ये चिंता लगी रहती है कि हमारा आनेवाला कल कैसा होगा। लगभग सबकी जिंदगी आधे से ज्यादा तो इसी सवाल में ही बीत जाती है। लेकिन मन में एक विचार आया कि हमारा आनेवाला कल तो हमारे हाथ में ही है, तो व्यर्थ ही इसकी चिंता क्यों?

देखा जाए तो बीता कल या आनेवाला कल कुछ भी हो सकता है हमारे आज से। जी हां आज से। मुझे पता है आपको विचार आयेगा एक और लेक्चर वगैरह वगैरह ..... पर जरा सोचिये ये अगर लेक्चर है तो आप सबने पहले ही इसपर अमल क्यों किया? मेरी बात का बुरा मत मानिये पर आप खुद ही सोचिये जो मैं कह रहा हूँ उससे आपका भला ही होगा। जो हम भुगतते हैं वो हमारे भगवान के हाथ में नहीं बल्कि हमारे द्वारा आज में किए कर्म से होता है जो हमारे कर्म होंगे वही हमारा बीता कल और आनेवाला कल होगा। इसका मतलब ये नहीं कि कर्म करना हम छोड़ दें। हमारा जीवन ऐसा बना है कि हम कर्म के बिना रह नहीं पाएंगे। दोस्तों हमें तो सिर्फ ये करना है कि हमारे आज को खुशियों और स्मार्ट वर्क से जोड़ना है जिससे दोनों कल यानि बीता और आने वाला दोनों रौशन होंगे और हम नई ऊँचाई पर होंगे।

निराशा, दुख, परेशानी जीवन में आती ही रहेंगी पर ऊपर जाकर जब भगवान पूछेंगे कि मैने तुम्हें कीमती ज़िंदगी दी थी और इतने वक्त तुम कुछ भी नहीं कर पाये या दूसरे शब्दों मे तुमने इसमें क्या अलग किया? इस विषय पर मुझे एक किस्सा याद आता है। एक बार हमारे राज्य की भूतपूर्व चुनाव अधिकारी अपनी दोस्त के घर पर गईं। उन्हें वहां गाना गाते हुए झाडूपोछा करने वाली नजर आती है। उससे इसका कारण पूछने पर वह बोली "काम करते वक्त अगर मैं गाना गाती हूँ तो मेरा दुख कम हो जाता है और काम का मजा भी आता है। इससे उस अधिकारी को एक सबक मिला जिसे आगे चलकर उन्होंने भी अपनाया। तो आइए हम सब मिलकर भगवान को धन्यवाद देते हुए हमारे आज को सुनहरा बनाएँ जिससे आनेवाला कल रौशन होगा। क्यों करेंगे न आप ये प्रयास?

अमित कदम
सहायक

पर्यावरण

पर्यावरण हमारे जीवन के लिए बहुत जरूरी है। लेकिन आज की दुनिया में लगता है ये या तो हमसे खत्म होगा या हम खुद को ही डुबो देंगे। सुनने में अजीब लगेगा पर जब हमारा शरीर साफ होता है तब हमारा शरीर बीमारियों से मुक्त होता है। हमें भूख लगती है, दिमाग ठंडा होता है शरीर को अच्छा लगता है। अगर हम गंदगी में नहीं रह सकते तो फिर हमारे पर्यावरण के साथ ऐसा सुलूक क्यों?

जगह– जगह देखता हूँ हर तरफ कचरा फैला हुआ है। चाहे समंदर हो, उसका किनारा हो, कोई रास्ता हो। हद तो तब हुई जब नदियों को नाला बना दिया गया। इससे प्रकृति को घुटन नहीं हो रही होगी या हमें कुछ पड़ी ही नहीं है।

दोस्तों, इस विषय के बारे में मेरा उद्देश्य सिर्फ आपको जागरूक करना है, ताकि आपको या हम सबको ये पता चले कि वास्तव में हम क्या कर चुके हैं। बादमें कहीं ऐसा न हो कि हम दुनिया बर्बाद होते हुए देखें। बस ये नाला, नदी या किनारा और रास्ता साफ रखकर देखो नजारा अपने आप कैसे चमकेगा, दुनिया बदलेगी और जिंदगी भी बदलेगी। इसके लिए जरूरत है खुद को बदलने की। एक किस्सा बताता हूँ एक बार एक बड़ी कंपनी में तगड़ी तनख्वाह लेने वाला शख्स सुबह घूमने के लिए समंदर किनारे आया तो उसे सामने कचरा फैला हुआ मिला। कोशिश और हिम्मत करके उसने अगली बार से वह बटोरना और उठाना शुरू किया। शुरू में काफी लोगों ने उसका मजाक उड़ाया, पर बाद में कई लोग उसके साथ आ गए। आखिर में वह किनारा एकदम साफ हो गया।

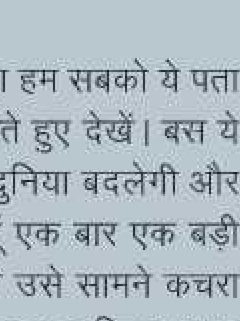

दोस्तों, हम पर्यावरण को साफ रखेंगे तभी तो शान से जी पाएँगे, वरना ये प्लास्टिक, रसायन, पेड़ों की कटाई आदि से साफ हवा कम हो जाएगी और ऐसी स्थिति में पर्यावरण पर गहरा असर पड़ेगा। तो आज हम सब मिलकर ये कसम लें कि हमारे पर्यावरण को जिंदा रखने का प्रयास करेंगे जिससे आनेवाली दुनिया हमें कोसे नहीं बल्कि हमारा नाम गुनगुनाती रहे।

अमित कदम
सहायक

मेरी जीवन संगिनी

अर्धांगिनी हो तुम मेरी, मेरी जीवन संगिनी हो तुम,
विवाह के बंधन में बंध कर निभाती हो अपना वचन तुम
घर को स्वर्ग से भी सुंदर बनाती हो तुम
रखती हो सबका पूरा ख्याल
अर्धांगिनी हो तुम मेरी, मेरी जीवन संगिनी हो तुम,

उठो जल्दी, काम पर नहीं जाना क्या
ये कहकर चिल्लातीं जब तुम
उठकर जल्दी सबके लिए खाना भी बनातीं तुम
बार–बार फोन कर मेरा हाल–चाल जब लेतीं तुम
अर्धांगिनी हो तुम मेरी, मेरी जीवन संगिनी हो तुम,

मेरे काम से लौटने पर भागी–भागी दरवाजे पर जब आतीं तुम
मुझे देखकर जब थोड़ा मुस्कुराकर शर्मातीं तुम
यूँ मानो दिनभर की सारी थकान चुरा ले जातीं तुम
प्रिय, अर्धांगिनी हो तुम मेरी, मेरी जीवन संगिनी हो तुम,

कुछ सोचूँ तो तेरा ही ख्याल आ जाता है,
कुछ लिखूँ तो तेरा ही नाम लिखा जाता है
किससे बयां करूँ अपने दिल की बात
वापस आ जाओ तुम बस इतनी सी है फरियाद
बस इतनी सी है फरियाद

अनुराग कुमार
नि.श्रे.लि.

मैं दुनिया की सभी भाषाओं की इज्जत करता हूं, पर मेरे देश में हिंदी की इज्जत न हो, ये मैं सह नहीं सकता।

आचार्य विनोबा भावे

अब मुझको समझाए कौन

अब मुझको समझाए कौन, बिखरे घर को सजाए कौन,
बातें इतनी कौन करेगा, सारी रात जगाए कौन।

मैं तो तनहा दिल लेकर, इतनी दूर चला आया,
प्यार भरी उन गलियों में, फिर से मुझे बुलाए कौन।

दिल भी कितना पागल है, अब भी तेरी ही बातें करता है,
जाने वाले कब लौटे हैं, इस नादां को समझाए कौन।

तेरी यादें लेकर मैं भी, गलियों– गलियों फिरता हूँ,
क्या है तेरा नया ठिकाना, मुझ पागल को बतलाए कौन।

धन– दौलत और ऊंच– नीच का, दुनिया में बंटवारा है,
सच्चे प्रीत के दो पंछी के, दिल से दिल को मिलाए कौन।

मुकेश कुमार भुर्तिया
सहायक

क रा बी नि महाराष्ट्र के टीओआर/ अवकाश गृह की सूची

क्र. सं.	टीओआर / अवकाश गृह	सुविधाएं	कमरों की संख्या	स्थान / पता
1	मरोल, अंधेरी (पू.) मुंबई	वातानुकूलित कमरे तथा शयनगृह, जिनमें पलंग, सोफा और टीवी की सुविधाएं हैं।	12 कमरे तथा 6 शयनगृह	उप–क्षेत्रीय कार्यालय, पंचदीप भवन, प्लॉट नंबर 9, रोड नंबर 7, एमआईडीसी मरोल, अंधेरी (ई) मुंबई–400093, ईमेलः dir-marol@esic.nic.in दूरभाषः 022 28225568 / 69
2	नासिक	वातानुकूलित कमरा (क्षमता 3 बिस्तर) और टीवी	1	उप–क्षेत्रीय कार्यालय, पंचदीप भवन, पहली मंजिल, प्लॉट नं. पी 4, त्रयंबक रोड, एमआईडीसी, सतपुर, नासिक – 422 007, दूरभाषः 0253–2351043
3	माथेरान, जिला–रायगढ़	वातानुकूलित कमरे (03 बिस्तर), प्रति दिन प्रति कमरा 1 लीटर की 04 पानी की बोतलें और मानार्थ चाय	2	राधा कॉटेज, पांडे रोड, ताल. – कर्जत, माथेरान, जिला–रायगढ़, महाराष्ट्र–410102, दूरभाष– 02148–202220 मोः 9422431723, 9833385209 9833385209
4	ताडोबा, जिला–चंद्रपुर	वातानुकूलित कमरे (जुड़वां बिस्तर) सोफा, टीवी की सुविधाओं के साथ	2	रॉयल टाइगर रिज़ॉर्ट, क्रमांक 63, ठाणेगांव, ताडोबा, मोहरली, तहसील– भद्रावती, जिला–चंद्रपुर
5	औरंगाबाद	टीवी के साथ वातानुकूलित कमरे (जुड़वां बिस्तर) तथा 6 बिस्तरों वाला शयनगृह	4 कमरे तथा 1 शयनगृह	उप–क्षेत्रीय कार्यालय, पी–82, पंचदीप भवन, नरेगांव रोड, एमआईडीसी चिकलथाना, औरंगाबाद।
6	अलीबाग, जिला–रायगढ़	वातानुकूलित कमरे (02 बिस्तर), मानार्थ नाश्ता, प्रति कमरा प्रति दिन 02 पानी की बोतलें, स्विमिंग पूल और रिसॉर्ट में उपलब्ध अन्य सभी सुविधाएं	2	अलीबाग, महाराष्ट्र– साईं इन रिज़ॉर्ट, रेवास रोड, चोंडी गांव, किहिम, ताल–अलीबाग, जिला–रायगढ़, महाराष्ट्र 402201, दूरभाष–02222–161639, मो. 9920510029
7	पेंच, जिला–नागपुर	वातानुकूलित कमरे (जुड़वां बिस्तर) सोफा, टीवी की सुविधाओं के साथ	2	गोफ्लेमिंगो रिज़ॉर्ट, तोतलाडोह रोड, सीतापुर, पोस्ट–पौनी, तहसील रामटेक, जिला–नागपुर, महाराष्ट्र

इनके अतिरिक्त नागपुर तथा पुणे में भी टी ओ आर हैं।

विशेष सेवा पखवाड़ा के तहत आयोजित जागरूकता शिविर, स्वास्थ्य जाँच शिविर, स्वछता अभियान तथा सुविधा समागम की झलकियाँ

कार्यालय में सत्यनारायण पूजा व सांस्कृतिक कार्यक्रम

मनोरंजन का मनुष्य के जीवन में असाधारण महत्व है। जैसे किसी ट्रेन को खींचने के लिए इंजन की आवश्यकता होती है, उसी तरह आयुष्य रूपी ट्रेन में मनोरंजन इंजन का कार्य करता है।

आज की आधुनिक जीवनशैली में शायद ही कोई मनुष्य होगा जो तनाव से मुक्त होगा। विज्ञान ने मनुष्य का जीवन जितना अधिक गतिशील, आधुनिक किया है, उतना ही तनावग्रस्त भी किया है।

इस तनावग्रस्त एवं निराशाजनक जीवन में मनोरंजन ही मनुष्य का एकमेव सच्चा साथी है, जो इसके प्रतिकूल परिणामों को कम, संभवतः नष्ट करने में मदद करता है।

मनुष्य अपने जीवन का औसतन एक तिहाई या उससे अधिक हिस्सा अपने कार्यस्थल पर व्यतीत करता है। ऐसे में उसे कई बार तनावपूर्ण परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। कई सारी कठिनाईयों से लड़ना पड़ता है। इन सभी स्थितियों से राहत पाने का सबसे अच्छा साधन है मनोरंजन।

इसीलिए इस लेख के माध्यम से हम, हमारे कार्यालय में वर्ष 2022 में आयोजित सांस्कृतिक एवं मनोरंजन कार्यक्रम के संबंध में अपना अनुभव आपके साथ साझा कर रहे हैं।

वैसे तो उप क्षेत्रीय कार्यालय मरोल में हर वर्ष पूजा समिति द्वारा सत्यनारायण पूजा के साथ–साथ सांस्कृतिक एवं मनोरंजन कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है। मात्र इस वर्ष इसका महत्व इसलिए अधिक था क्योंकि तकरीबन 2 वर्षों के अंतराल के बाद नई समिति, नए प्रभारी महोदय, अधिकारी तथा कर्मचारियों द्वारा इसका आयोजन किया जाना था, साथ ही प्रशासन द्वारा कोविड–19 के अनुसरण में जारी दिशा निर्देशों का पालन भी करना था।

माननीय प्रभारी महोदय के अनुमोदन पश्चात समिति द्वारा पूजा के साथ–साथ विविध सांस्कृतिक कार्यक्रम, फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता, मनोरंजन कार्यक्रम, विविध खेलकूद का आयोजन किया गया।

जैसे कि एसिक परिवार की प्रथा रही है, उसी अनुसार कार्यालय प्रधान माननीय प्रभारी महोदय के हस्त कमलों द्वारा कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। इस कार्यक्रम मे आयोजित नृत्य स्पर्धा, गायन स्पर्धा, बॉक्स क्रिकेट मैच, रस्सी–खींच, संगीत कुर्सी, बकेट बॉल आदि में कर्मचारी/अधिकारियों का सहभाग सराहनीय था। आयोजन में उप क्षेत्रीय कार्यालय मरोल के प्रांगण में स्थापित किया गया सेल्फी

पॉइंट आकर्षण का विशेष केंद्र बना। कर्मचारियों से लेकर अधिकारियों तक तस्वीरों के शौकीन सभी लोगों ने इसका खूब लुत्फ उठाया। खेलों अथवा स्पर्धाओं में भाग लेने वाले प्रतिभागियों ने जितना इसका आनंद लिया उससे कई गुना ज्यादा एसिक परिवार के श्रोतागणों ने इसका आनंद लिया। खास कर बॉक्स क्रिकेट के समापन पश्चात कई अधिकारी/कर्मचारियों ने समिति के पास अपना मनोगत व्यक्त करते हुए बताया कि लंबे समय बाद उन्होंने क्रिकेट का इतना लुत्फ उठाया एवं जिसके परिणामस्वरूप वे काफी प्रसन्न भी महसूस कर रहे हैं। सभी कर्मचारी/अधिकारी शारीरिक एवं मानसिक रूप से हर्षित एवं थकानरहित महसूस कर रहे थे और यही इस आयोजन की सफलता थी।

इस आयोजन की सफलता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि, कार्यालय प्रधान माननीय प्रभारी महोदय ने स्वयं मंच पर आकर समिति द्वारा किए गए आयोजन की प्रशंसा की माननीय प्रभारी महोदय के मार्गदर्शन, अधिकारीगणों के सुझाव, पूर्व समिति के अनुभव, सेवानिवृत्त कर्मचारी/अधिकारीगणों के स्नेह, नई समिति की मेहनत, जोश एवं अन्य सभी साथी कर्मचारियों विशेष कर मनोरंजन कक्ष, कर्मचारी संगठन, हाउस कीपिंग स्टाफ के सहयोग से इस कार्यक्रम को सफल बनाना संभव हो पाया।

बीते कुछ समय में भारत ही नहीं बल्कि पूरे विश्व ने कोविड–19 नामक वैश्विक महामारी का सामना किया है। कई लोगों ने अपनों को खोया, तो कई लोगों ने अपनी जीवन भर की कमाई इसमें खो दी। जिसने विश्व भर के लोगों के जीवन को निराशा और तनाव से भर दिया। सभी स्तरों पर इसके प्रतिकूल परिणाम अभी तक दिखाई दे रहे हैं। इसीलिए मनुष्य के जीवन में खासकर उनके कार्यस्थल, कार्यालयों में इस तरह के मनोरंजन एवं संस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करना कर्मचारियों/अधिकारियों के जीवन में ताजगी लाने में, उनके अंदर छुपे कलागुणों को उभारने में, नए विचारों को उत्पन्न करने में कारगर साबित होता है। जिसका सही उपयोग कर कर्मचारियों/अधिकारियों एवं कार्यालयों के स्वास्थ को भी बेहतर बनाया जा सकता है।

राहुल परदेशी
सहायक

अंकुश भूयार
सहायक

माँ

आधी रात को कई बार बेचैन होकर
उठ जाती है वो
हम ठीक हैं या नहीं ये सोच कर
सो नहीं पाती हैं वो
कोई रुठ ना जाए, कई दफा
अपने वजूद को भी नज़र अंदाज़
कर जाती है वो
रिश्तों के मोतियों को एक धागे में पिरोकर
मकान को घर बनाती है वो
चाहे उसके अंतर्मन में कितनी भी व्यथा
क्यों ना हो,
हमारी एक मुस्कुराहट देख अपना दर्द
भूल जाती है वो
हमारे आने के इंतज़ार में, दरवाज़े पर
टकटकी लगाए रहती है वो
एक पैर रसोइ में तो एक नज़र,
घड़ी पे टिकाए रहती है वो,...
माँ ही तो है, इस तरह हमारा स्वागत
करती है जो

सुमन प्रजापत
शाखा प्रबन्धक

'यद्यपि मैं उन लोगों में से हूं, जो चाहते हैं और जिनका विचार है कि हिंदी ही भारत की राष्ट्रभाषा हो सकती है'।

- लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक

साथ

मुझे अपने ख्यालों में आपको रखना ही होगा,
जब-जब सफलता की सीढ़ी चढ़ेंगे आप,
उसका थोड़ा सा श्रेय, मुझे भी देना होगा।
मायूसियाँ घेर कर भी, अगर आपका कुछ
बिगाड़ ना सकें, तो समझ लेना..
मैंने दुआओं में भी आपका हाथ थामे रखा होगा।
कुछ देर को, अगर हम ओझल हो जाएँ,
घबराना नही, बस यकीन रखना..
खुदा ने हमें एक ही डोर से बाँधे रखा होगा।

सुमन प्रजापत
शाखा प्रबन्धक

प्रांतीय ईर्ष्या-द्वेष को दूर करने में जितनी सहायता हिंदी प्रचार से मिलेगी, उतनी दूसरी किसी चीज़ से नहीं मिल सकती।

- सुभाषचंद्र बोस

मुंबई में क रा बी नि कर्मचारियों/ पेंशनर्स तथा उनके आश्रितों के लिए नकदरहित अति विशिष्ट तथा द्वितीयक चिकित्सा सुविधा हेतु टाइ – अप अस्पतालों की सूची

क्र सं	अस्पताल	पता
1	एपेक्स मल्टीस्पेशलिटी अस्पताल बोरिवली (पूर्व)	वेस्टर्न एक्सप्रेस हाईवे, दत्तापाड़ा रोड सुस्वागत रेस्टोरेंट के पास, बोरीवली 400066
2	शुश्रूषा हार्ट केयर सेंटर तथा स्पेशलिटी अस्पताल नेरुल	प्लॉट न. 22 / ए, फेज–III, पाम बीच रोड़, सेक्टर– 6, नेरुल (पश्चिम) नवी मुंबई 400706
3	रिद्धि विनायक क्रिटिकल केयर एंड कार्डियक सेंटर मलाड (पश्चिम)	559 / 1, रिद्धि विनायक अस्पताल बिल्डिंग, रिद्धि विनायक मंदिर गली, एन.एल. स्कूल के पास, एस.वी. मार्ग, मलाड (पश्चिम) मुंबई
4	सेवेन हिल्स अस्पताल अंधेरी(पूर्व)	मरोल मारोशी रोड, महावीर नगर, पंडित दीनदयाल उपाध्याय नगर, अंधेरी (पूर्व), मुंबई, महाराष्ट्र 400059

दुल्हन या दहेज

जब लड़का शादी करके अपने घर पहुंचा, तो सबने पूछा क्या– क्या मिला दहेज में, कुछ देर तो लड़का चुप रहा फिर उसने जो जवाब दिया उसने मन जीत लिया ।

उसने कहा – आज मैं दुनिया का सबसे अमीर आदमी बन गया हूँ। एक बाप ने मुझे अपनी जान से भी प्यारी बेटी दे दी, एक भाई ने अपनी हमजोली दे दी, एक बहन ने अपनी परछाई दे दी, और तो और एक माँ जो दुनिया को सबकुछ दे सकती है पर अपनी संतान नहीं , उस माँ ने अपने आँचल में पली अपनी गुड़िया दे दी, और क्या चाहिए मुझे।

अंकित कुमार
अवर श्रेणी लिपिक

देश की किसी संपर्क भाषा की आवश्यकता होती है और वह (भारत में) केवल हिन्दी ही हो सकती है।

- श्रीमती इंदिरा गांधी

राजभाषा नियम 8(4) के तहत कार्यालय की विनिर्दिष्ट शाखाएँ

क्र सं	विनिर्दिष्ट शाखाएँ	क्र सं	विनिर्दिष्ट शाखाएँ
1	रोकड़ शाखा	7	प्रशासन शाखा
2	हितलाभ शाखा	8	बड़ा नियोजक कक्ष
3	लोक शिकायत कक्ष	9	बीमा शाखा 1
4	सामान्य शाखा	10	बीमा शाखा 3
5	प्रेषण शाखा	11	बीमा शाखा 7
6	आई सी –2	12	बीमा शाखा 8

संयुक्त परिवार का महत्त्व

अंकित कुमार
अवर श्रेणी लिपिक

एक वाकया मैं बचपन से सुनता आ रहा हूँ, ये वाकया बताने वाले तो आज हमारे बीच नहीं रहे लेकिन उनका ये वाकया आज भी मुझे याद है जो मैं आप लोगों से साझा करना चाहता हूँ ।

उन्होंने कहा था – एक पत्थर लीजिये और उस पत्थर से किसी कुत्ते को मारिए आप देखेंगे कि जानवर डर कर भाग जाएगा।

अब वही पत्थर लीजिये और एक मधुमक्खी के छत्ते पर मारिये फिर देखेंगे कि मधुमक्खियाँ नहीं आप भागेंगे।

दोनों परिस्थितियों में पत्थर वही है और आप भी वही हैं बस फर्क इतना है कि जानवर अकेला था और मधुमक्खियाँ समूह में थीं। इसीलिए हमेशा संयुक्त रहें । संयुक्त परिवार की यही विशेषता है ।

हिन्दी प्रयोग प्रोत्साहन योजना वर्ष–2021–22 के पुरस्कार

क्र सं	नाम / सर्व श्री / श्रीमति / कु.	पदनाम	तैनाती स्थान	पुरस्कार की राशि
1	अंकुश भूयार	सहायक	बीमा–1	600
2	संतोष परशुराम मोरे	सहायक	बीमा–1	600
3	एस. एस. व्यास	सहायक	बीमा–1	600
4	मोहन सोन्नेकर	सहायक	बीमा–1	600
5	अमृता कुमारी	उ.श्रे.लि	बीमा–1	600
6	दर्शना मेंढे	उ.श्रे.लि.	बीमा–1	600
7	कुन्दन कुमार	सहायक	बीमा–4	600
8	मनीष कुमार	उ.श्रे.लि	बीमा–4	600
9	एम.के.चौधरी	उ.श्रे.लि	बीमा–4	600
10	दीपक यादव	सहायक	बीमा–3	600
11	तनवीर आलम	सहायक	बीमा–3	600
12	नीतिश राणे	सहायक	बीमा–3	600
13	चैताली आशिष ढोक	सहायक	बीमा–3	600
14	अजमीरा प्रेम कुमार	उ.श्रे.लि	बीमा–3	600
15	मंगेश शंकर सालवी	सहायक	बीमा–8	600
16	विभा नि. नंदेश्वर	सहायक	बीमा–8	600
17	चैतन्य श्याम फाटे	उ.श्रे.लि	बीमा–8	600
18	केश्वुलु गोटिके	उ.श्रे.लि	बीमा–8	600
19	रंजीत कुमार साहू	सहायक	वसूली शाखा	600
20	वनिता जॉनसन	सहायक	वसूली शाखा	600
21	धनराज मीना	सहायक	वसूली शाखा	600
22	दिगम्बर सिंह	उ.श्रे.लि	वसूली शाखा	600
23	अजीत सिंह	उ.श्रे.लि	वसूली शाखा	600
24	शंकर सुमन	उ.श्रे.लि	शा.का.मरोल	600
25	आयुषी किशोर वासनिक	उ.श्रे.लि	शा.का.मरोल	600
26	सतीश म. खंडारे	सहायक	शा.का.मरोल	600
27	अरुण कुमार	नि.श्रे.लि.	शा.का.मरोल	600
28	प्रशांत पटेल	उ.श्रे.लि	शा.का.मरोल	600
29	प्रमोद कुमार लोखड़े	सहायक	शा.का.मरोल	600
30	अमित कुमार	उ.श्रे.लि	शा.का.बोरीवली	600
31	मुकेश कुमार दुबे	नि.श्रे.लि.	शा.का.बोरीवली	600
32	प्रकाश कुमार	उ.श्रे.लि	शा.का.कांदिवली	600
33	विकास कुमार	नि.श्रे.लि.	शा.का.कांदिवली	600
34	मिथिलेश कुमार	उ.श्रे.लि	बीमा–6	600
35	रितेश कुमार	सहायक	बीमा–6	600
36	राज प्रकाश कुमार	सहायक	बीमा–6	600
37	राहुल पारसनाथ परदेशी	सहायक	हितलाभ शाखा	600
38	रौशन सुरेश काटोले	सहायक	हितलाभ शाखा	600
39	आदित्य राज	नि.श्रे.लि.	हितलाभ शाखा	600
40	पवन कुमार	सहायक	वित्त एवं लेखा शाखा	600
41	पंकज डी पाटील	सहायक	वित्त एवं लेखा शाखा	600
42	प्रशांत नंदलाल गेडाम	सहायक	बीमा–5	600
43	दीपक कुमार	सहायक	बीमा–5	600
44	रविंद्र रामचन्द्र कदम	सहायक	बीमा–5	600
45	जितेन्द्र सिंह यादव	सहायक	बीमा–5	600
46	विकास रामचन्द्र आंबेकर	उ.श्रे.लि	बीमा–5	600
47	हर्षदा कि. शेलार	सहायक	बीमा–5	600
48	संजीत कुमार गुप्ता	सहायक	बीमा–5	600
49	रिशिका कालोनिया	अधीक्षक	बीमा–5	600
50	रमाशंकर दास	उ.श्रे.लि	वसूली शाखा	600
51	दिपेन्द्र ग. गडीकर	सहायक	बीमा–2	600
52	देवेंद्र ग. सालुंके	सहायक	बीमा–2	600

क्र सं	नाम / सर्व श्री / श्रीमति / कु.	पदनाम	तैनाती सीन	पुरस्कार की राशि
53	नितिन नेवलकर	सहायक	बीमा–2	600
54	सच्चिदानन्द पटेल	सहायक	बीमा–2	600
55	सर्वेन्द्र कुमार शर्मा	सहायक	बीमा–2	600
56	हरिओम गुप्ता	सहायक	बीमा–2	600
57	प्रमोद कुमार सिंह	उ.श्रे.लि	बीमा–2	600
58	कुणाल सुरेश गोसावी	उ.श्रे.लि	बीमा–2	600
59	अंकित कुमार	नि.श्रे.लि	बीमा–2	600
60	राकेश कुमार	सहायक	सामान्य शाखा	600
61	तिरुपति पटनाईक	सहायक	सामान्य शाखा	600
62	प्रवीण कुमार	सहायक	सामान्य शाखा	600
63	लोकेश कुमार	सहायक	सामान्य शाखा	600
64	अनमोल बहरानी	उ.श्रे.लि	सामान्य शाखा	600
65	अजय यादव	उ.श्रे.लि	सामान्य शाखा	600
66	मनीष कुमार	उ.श्रे.लि	सामान्य शाखा	600
67	आदर्श राज	नि.श्रे.लि.	सामान्य शाखा	600
68	मनोज हु. यादव	सहायक	लोक शिकायत कक्ष	600
69	रत्नेश कुमार	नि.श्रे.लि	लोक शिकायत कक्ष	600
70	दीपक मूसले	उ.श्रे.लि	सी.ए.आई.यू.	600
71	पवन कुमार तिवारी	उ.श्रे.लि	प्रशासन शाखा	600
72	दिलीप आर. गावीत	सहायक	बड़ा नियोजक कक्ष	600
73	योगेश गौतम खेरे	नि.श्रे.लि.	बड़ा नियोजक कक्ष	600
74	वीर अभिमन्यु सिंह	सहायक	प्रशासन शाखा	600
75	संदीप बागड़े	सहायक	रोकड़ शाखा	600
76	पुष्पा सुब्रमणियन	सहायक	रोकड़ शाखा	600
77	एकता कुमारी	सहायक	रोकड़ शाखा	600
78	रविकान्त कुमार	सहायक	रोकड़ शाखा	600
79	सचिन तोरणे	नि.श्रे.लि.	रोकड़ शाखा	600
80	दिपक राजेश व्यवहारे	उ.श्रे.लि.	प्रशासन शाखा	600
81	पूर्णिमा शाह	सहायक	प्रशासन शाखा	600
82	मुकेश कुमार	सहायक	प्रशासन शाखा	600
83	रक्षा राजपुरोहित	अधीक्षक	आई सी–2	600
84	दीप्ति सचिन उरहेकर	सहायक	आई सी–2	600
85	राहुल कुमार उपाध्याय	सहायक	आई सी–2	600
86	प्रवीण मिलिंद भिमटे	उ.श्रे.लि.	आई सी–2	600
87	आस्था कान्त	सहायक	बीमा–4	600
88	हर्षद गजानन आंबोलकर	सहायक	बीमा–7	600
89	शुभम सुरजागड़े	उ.श्रे.लि.	बीमा–7	600
90	नीतिशा टेंभुर्णे	उ.श्रे.लि.	बीमा–7	600
91	निखिल कुमार	उ.श्रे.लि.	बीमा–7	600
92	आशीष कुमार शर्मा	उ.श्रे.लि.–खजांची	शा.का.वसई	600
93	मुकेश कुमार भूर्तिया	सहायक	शा.का.वसई	600
94	शंकदीप उरकूड़ा महेर	उ.श्रे.लि.	शा.का.वसई	600
95	यशवंत कुमार	सहायक	शा.का.वसई	600
96	मुकेश कुमार	सहायक	शा.का.वसई	600
97	संतोष कुमार	सहायक	शा.का.वसई	600
98	रितुराज चौधरी	उ.श्रे.लि.–खजांची	शा.का.मीरा रोड	600
99	अभिषेक कुमार	नि.श्रे.लि.	शा.का.मीरा रोड	600
100	अनुज कुमार	उ.श्रे.लि.	बीमा–7	600
101	योगेश पाटिल	सहायक	शा.का.अंधेरी	600
102	अनुराग कुमार	नि.श्रे.लि.	शा.का.अंधेरी	600

मूल हिंदी टिप्पण- आलेखन योजना वर्ष–2021–22 के पुरस्कार

क्र सं	नाम/सर्व श्री /श्रीमति/कु.	पदनाम	तैनाती स्थान	पुरस्कार	पुरस्कार की राशि
1	राहुल पारसनाथ परदेशी	सहायक	हितलाभ शाखा	प्रथम	5000/–
2	आस्था कान्त	सहायक	बीमा शाखा 4	प्रथम	5000/–
3	मुकेश कुमार	सहायक	प्रशासन शाखा	द्वितीय	3000/–
4	वीर अभिमन्यु सिंह	सहायक	प्रशासन शाखा	द्वितीय	3000/–
5	कुन्दन कुमार	सहायक	बीमा शाखा 4	द्वितीय	3000/–
6	पवन कुमार तिवारी	उ.श्रे.लि	प्रशासन शाखा	तृतीय	2000/–
7	मनोज हु. यादव	सहायक	लोक शिकायत कक्ष	तृतीय	2000/–
8	प्रवीण कुमार	सहायक	बीमा शाखा 4	तृतीय	2000/–
9	अंकुश बापुराव भूयार	सहायक	बीमा शाखा 1	तृतीय	2000/–
10	लौकेश कुमार	सहायक	सामान्य शाखा	तृतीय	2000/–

वर्ष–2022 हिंदी पारंगत प्रशिक्षण परीक्षा उत्तीर्ण कर्मचारी

क्र सं	नाम/सर्व श्री /श्रीमति/कु.	पदनाम	तैनाती स्थान	पुरस्कार की राशि
1	निधी अले,	उ.श्रे.लि	प्रशासन शाखा	10,000/–
2	देवेंद्र सालुंके	सहायक	बीमा शाखा 2	10,000/–
3	योगेश खैरे	नि.श्रे.लि	बड़ा नियोजक कक्ष	10,000/–
4	दर्शना मेंढ़े	उ.श्रे.लि	बीमा शाखा 1	10,000/–
5	केशवुलु गोटिके	उ.श्रे.लि	बीमा शाखा 8	7,000/–
6	मंगेश चौधरी	उ.श्रे.लि	बीमा शाखा 1	7,000/–
7	नीतिशा टेंभुरने	उ.श्रे.लि	बीमा शाखा 2	4,000/–

कार्तिकेय नरेश मुसले
भतीजा श्री दीपक मुसले
(प्र. श्रे. लि.)

इयरफोन

बड़ी शिद्दत से उलझे हुए हैं हम अपना इयरफोन सुलझाने में,
बड़े दिनों बाद आज एक कमी महसूस हुई
कमी लता मंगेशकर की सुरीली आवाज़ की,
कमी अल्का याग्निक के मुस्कुराते अंदाज़ की,
कमी श्रेया घोषाल के शब्दों के लिहाज़ की,
खैर, इस सोमवार की सुबह ज़िन्दगी में
जैसे कुमार सानु के गाने पूरे मन को रोग मुक्त कर देते हैं
वैसे ही दफ्तर जाते वक्त बीच रास्ते में इयरफोन का खराब हो जाना
मुस्कुराते हुए चेहरे को अवसाद युक्त कर देते हैं
छोटी सी इस ज़िन्दगी में बस एक अर्जीत सिंह का ही सहारा है
बाकी सोनू निगम और शान ने भी क्या खूब संभाला है
अब लगता है अपने शब्दों को विराम देना होगा,
संगीत की दुनिया से निकल कर, काम पर ध्यान देना होगा,
अंत में बस मुझको कहना है यही
कि ये इयरफोन सुलझे अब तक नहीं।

मयंक राज
शाखा प्रबंधक

ख्वाब

क्या बताएँ अब उसके बारे में,
बचपन में देखा जो एक ख्वाब था
सुकून की जिन्दगी, महँगी गाड़ी, आलिशान बंगला,
ख्वाब में मैंने धन देखा बेशुमार था।
अब वो ख्वाब एक धुंधले साए की तरह
हर इतवार मेरे सिरहाने आता है,
जिम्मेदारियों तले दबी हुई इन उम्मीदों को
फिर एक नया ख्वाब दिखाता है।
पर अब इतनी फुरसत कहाँ,
अब वो बचपन वाला सुकून, वो नींद कहाँ,
नए लोग, नया शहर, नए रास्ते
उधड़ी–फटी ज़िन्दगी में अब तो कुछ सुकून के लम्हे
छुट्टियों से उधार लेकर रफ्फु कराने पड़ते हैं।
बस एक सवाल है,
जो अक्सर पुरानी डायरी के फटे पन्नों से मुझे निहारता है
हर सोमवार की सुबह बिना अलार्म ही मुझे जगाता है।
कोई जाकर पूछे उन हजारों अधूरे ख्वाबों से
सच होने में क्यों इतनी देर हुई,
मैंने उन्हें संजोया तो बड़ी ही शिद्दत के साथ था
बचपन में देखा जो एक ख्वाब था।

मयंक राज
शाखा प्रबंधक

भ्रष्टाचार : एक घोर बीमारी

एक तस्वीर ......

एक तस्वीर मेरे भारत की, जब सोने की चिड़िया कहलाता था,
प्रेम, आदर, सम्मान का भाव जो हृदय में उमड़ कर आता था,
पर अब कहीं गुम है, नफरत और लालच के डेरे में,
भ्रष्टाचार, चोरी और गुंडागर्दी बसी है अब हर कोने में।

जब मैं कक्षा पाँचवी में थी, हमारी शिक्षक ने हमसे एक प्रश्न पूछा था, उस समय तो हमें लगा कि यह कितना छोटा सवाल है परंतु जैसे – जैसे विद्या प्राप्त हुई समझ आया कि उसका अर्थ कितना प्रधान था। तो सवाल यह था कि तुम बड़े होकर क्या बदलना चाहते हो? हम तो ठहरे बच्चे अपने खेलने–कूदने के दिनों में यह कहाँ सोचने बैठते लेकिन अब जब वह प्रश्न याद करती हूँ तो मन में बस एक शब्द आता है "भ्रष्टाचार मुक्त भारत"।

प्रतिदिन न्यूज में, अखबारों में, हर जगह हम सुनते हैं – भ्रष्टाचार दिनों– दिन बढ़ रहा है, और वह गरीब जिसे दो वक्त की रोटी नसीब नहीं होती बेचारा आग में जल रहा है। अक्सर गांधी जी की बात याद आ जाती है– " यह धरती हर एक की जरूरत तो पूरी का सकती है , लेकिन किसी एक का भी लालच नहीं।"

आखिर कब होता है भ्रष्टाचारः– जब व्यक्ति अपने निजी लाभ के लिए देश की संपत्ति का शोषण करता है। भ्रष्टाचार का शाब्दिक अर्थ है भ्रष्ट आचरण। यह भ्रष्टाचार एक ऐसा अनैतिक आचरण है, जिसमें व्यक्ति खुद की छोटी इच्छाओं की पूर्ति के लिए देश को संकट में डालने में थोड़ा भी हिचकिचाता नहीं है।

भ्रष्टाचार के कारणः

व्यक्ति का लोभी स्वभाव, आदत, मंशा। देश में व्याप्त भ्रष्टाचार की वजह से लोगों को भ्रष्टाचार की आदत पड़ गई है। हर जगह भ्रष्टाचार है– कार्यालय में रिश्वत के लेन– देन, चुनाव के समय धांधली, किसी प्रिय को पद पर रखना जिसके वह काबिल नहीं है, दूसरों के साथ अन्याय, नागरिकों द्वारा टैक्स चोरी, शिक्षा के क्षेत्र में घूसखोरी, खेल के क्षेत्र में घूसखोरी। इसी तरह समाज के अन्य छोटे से बड़े क्षेत्र में भ्रष्टाचार देखा जा सकता है। दहेज और भ्रष्टाचार दोनों ही चलती आ रही गलत प्रथाएँ हैं।

देखते हैं कुछ उपाय :–

हमारे न्याय में होने वाली देरी की वजह से अपराधी में दण्ड का बहुत अधिक भय नहीं रह गया है। भ्रष्टाचार के विरूद्ध सख्त कानून बनाने की आवश्यकता है। कानूनी प्रक्रिया में काफी समय नष्ट होता है। इससे भ्रष्टाचार को बल मिलता है। justice delayed is denied. देश में लोकपाल कानून की आवश्यकता है। देश को भ्रष्टाचार मुक्त करने का हर संभव प्रयास हर देशवासी को करना चाहिए। न भ्रष्टाचार करें ,न करने दें।

आसिमा नाज़
पुत्री श्री तनवीर आलम, सहायक

कवच
अपनी संतानों के

है ममता का सागर माँ,
पिता हिमालय से ऊँचे हैं।
कवच हैं अपनी संतानों के
संतानों में जीतें हैं।

आत्मनिर्भर बना बच्चों को,
संस्कारों से ही बांधा है।
आदर्श, हिम्मत, दया, दृष्टि,
गुणों से ही साधा है।

प्यार दुलार अनुशासित कर,
स्वतः पैरों पर खड़ा कराया।
थोड़े में ही खुद सिमट कर
बच्चों को आगे बढ़ाया
है ममता का सागर माँ,
पिता हिमालय से ऊँचे हैं।

अमित कुमार
प्रवर श्रेणी लिपिक

उप क्षेत्रीय कार्यालय, मरोल परिसर, स्थापनाओं तथा मुंबई अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे में योग सत्र का आयोजन

कोई राष्ट्र अपनी भाषा को छोड़कर राष्ट्र नहीं कहला सकता. भाषा की रक्षा सीमाओं की रक्षा से भी जरूरी है.

- थामिस डेविस

कण-कण के वासी

जो है रहता कण-कण में
ढूँढ रहे हैं उसको कंकड़-पत्थर,
मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारे में।

कभी उतारे आरती, कभी चढ़ावे चादर
ढूँढे नहीं कोई उसको, अपने ही भीतर
जो खुद में है रामायण
गीता, कुरान और गुरबानी
उसके भी नाम पर लेते हैं ये कुरबानी।

छोड़ो करना ये काम आपस में
हो रहे हम बदनाम आपस में
करो तुम प्यार आपस में
लो जीवन का सार आपस में।

ढूँढो उसको अपने ही भीतर
बसा है जो हर कण में
करो सम्मान एक-दूसरे के
अस्तित्व का और मानवता का
अंकित करो मानव मूल्य को
मत फैलाओ तुम भ्रांति।
मत फैलाओ तुम भ्रांति।।

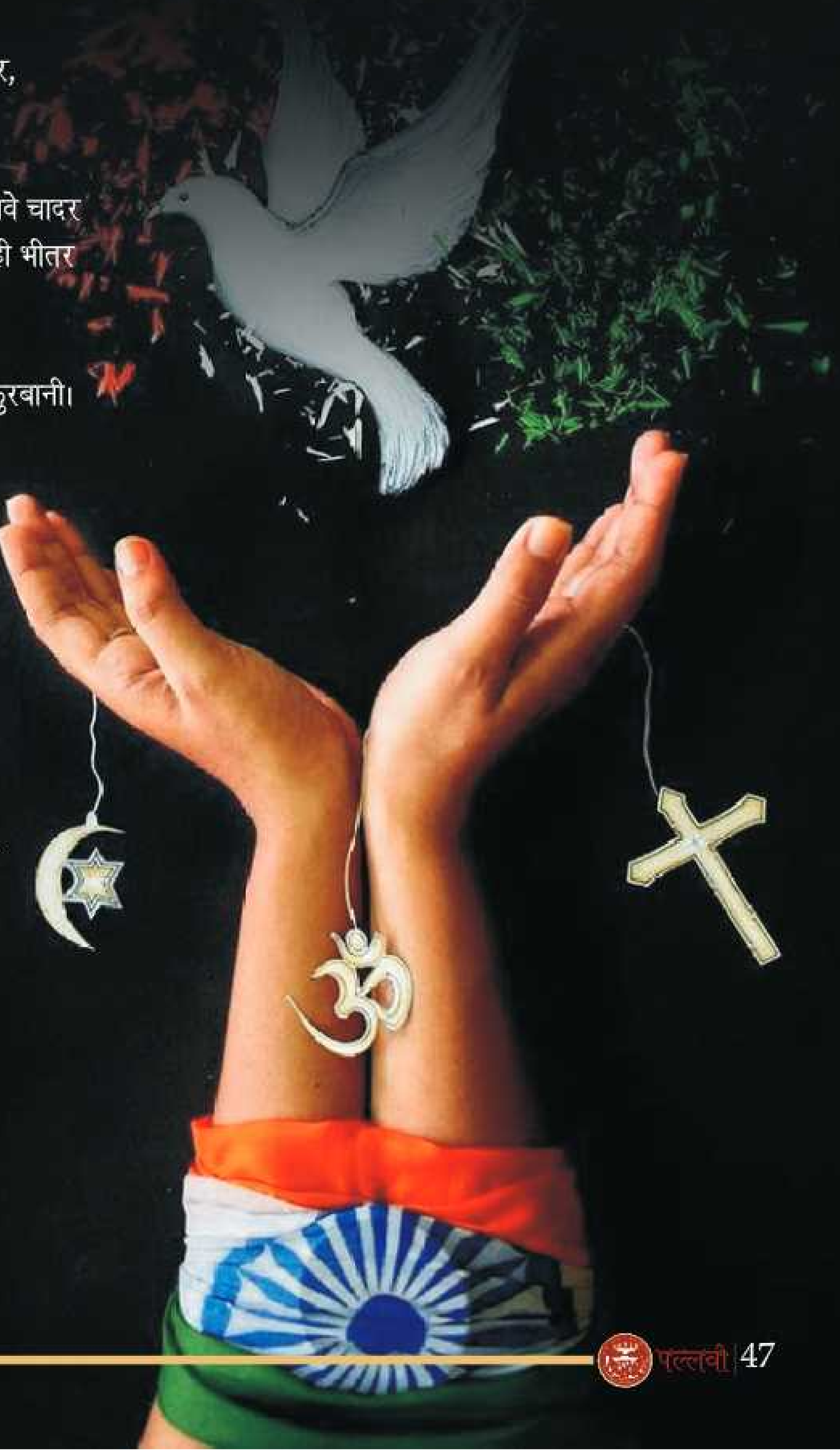

मुकेश कुमार दुबे
ब.का.क.

मुख्यालय/Headquarters
कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एंव रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
क.रा.बी.नि. Employees' State Insurance Corporation
E.S.I.C. (Ministry of Labour & Employment, Govt. of India)

पंचदीप भवन, सी.आई.जी. मार्ग, नई दिल्ली-110002
PANCHDEEP BHAWAN, C.I.G. MARG, NEW DELHI-110 002
Website: www.esic.nic.in / www.esic.in

संख्या : ए-49/16/2/2021-रा.भा. | दिनांक: 05 जनवरी, 2022

सेवा में,

1. बीमा आयुक्त, राष्ट्रीय प्रशिक्षण अकादमी, नई दिल्ली ।
2. सभी क्षेत्रीय निदेशक, क.रा.बी.निगम, क्षेत्रीय कार्यालय ।
3. सभी निदेशक/ प्रभारी संयुक्त निदेशक, उप क्षेत्रीय/ प्रभागीय कार्यालय ।
4. निदेशक (चिकित्सा) दिल्ली/ नोएडा/ के.के.नगर ।
5. सभी चिकित्सा अधीक्षक। क.रा.बी.निगम अस्पताल ।

विषय : निगम इकाइयों में प्रचलित कर्मचारी राज्य बीमा निगम- हिंदी प्रयोग प्रोत्साहन योजना -वर्ष 2021

महोदय/ महोदया,

निगम में कर्मचारी राज्य बीमा निगम- हिंदी प्रयोग प्रोत्साहन योजना जनवरी, 1985 से लागू हैं जो प्रत्येक वर्ष **01 जनवरी से 31 दिसंबर** तक की अवधि के लिए होती हैं। इस योजना में 600/- रुपये का पुरस्कार प्रदान किया जाता है। वर्ष 2021 के दौरान जिन अधिकारियों/ कर्मचारियों ने निर्धारित प्रतिशतता (राजभाषा क्षेत्र - 'क', 'ख' तथा 'ग' में स्थित कार्यालयों में कार्यरत कार्मिकों के लिए क्रमश: 100, 75 तथा 50 प्रतिशत) में सरकारी कामकाज हिंदी में किया है, उनसे निम्नलिखित प्रपत्र में प्रविष्टियां आमंत्रित की जाएं :-

कर्मचारी राज्य बीमा निगम- हिंदी प्रयोग प्रोत्साहन योजना के लिए प्रविष्टि प्रपत्र

अधिकारी/ कर्मचारी का नाम व पदनाम :
अधिकारी/ कर्मचारी संख्या :
अधिकारी/ कर्मचारी का मोबाइल नं. एवं ईमेल पता :
शाखा का नाम (वीओआईपी संख्या सहित) :
(1 जनवरी, 2021 से 31 दिसंबर, 2021 तक) :

अधिकारी/कर्मचारी द्वारा घोषणा पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि वर्ष 2021 के दौरान मैंने टिप्पण/आलेखन में निर्धारित प्रतिशतता ...... तक / से अधिक कार्यालयीन कार्य हिंदी में किया हैं। इस अवधि में मैंने न तो मात्र टंकण/ डायरी-डिस्पैच का कार्य किया है और न ही मैं राजभाषा शाखा में तैनात था/ थी ।

दिनांक : | आवेदक के हस्ताक्षर

नियंत्रक/ रिपोर्टिंग अधिकारी के मुहर सहित प्रति हस्ताक्षर

आमंत्रित प्रविष्टियों पर कार्यालय में यथानिर्धारित प्रक्रिया का अनुसरण करते हुए मूल्यांकन समिति की अनुशंसा पर कार्यालय अध्यक्ष की सहमति के उपरांत जारी पुरस्कृत कार्मिकों की सूची निगम मुख्यालय को निश्चित रूप से दिनांक 30 अप्रैल, 2022 तक भिजवा दें। कृपया इस प्रोत्साहन/ पुरस्कार योजना का व्यापक प्रचार करें ताकि वर्ष 2022 में अधिकाधिक अधिकारी और कर्मचारी इस योजना के माध्यम से राजभाषा हिंदी के प्रयोग/ प्रसार से जुड़ सकें।

भवदीय,
05.1.2022
(श्याम कुमार)
संयुक्त निदेशक (राजभाषा)

प्रतिलिपि :

वेबसाइट सामग्री प्रबंधक को इस अनुरोध के साथ कि इस पत्र को क.रा.बी.निगम की वेबसाइट पर अपलोड करें।

05.1.2022
संयुक्त निदेशक (राजभाषा)

हिन्दी हेतु प्रोत्साहन योजनाओं से संबंधित कुछ अनुदेश

मुख्यालय/Headquarters
कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
क.रा.बी.नि. Employees' State Insurance Corporation
E.S.I.C. (Ministry of Labour & Employment, Govt. of India)

पंचदीप भवन, सी.आई.जी. मार्ग, नई दिल्ली-110002
PANCHDEEP BHAWAN, C.I.G. MARG, NEW DELHI-110 002
Website: www.esic.nic.in / www.esic.in

संख्या : ए-49/16/03/2007-रा.भा. दिनांक : 02 मई, 2022

सेवा मे,

1. बीमा आयुक्त, राष्ट्रीय प्रशिक्षण अकादमी, द्वारका, नई दिल्ली।
2. अपर आयुक्त एवं क्षेत्रीय निदेशक/निदेशक/प्रभारी संयुक्त निदेशक/प्रभारी उप निदेशक, क्षेत्रीय कार्यालय/उप क्षेत्रीय कार्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम।
3. चिकित्सा अधीक्षक, क.रा.बी.निगम अस्पताल/ क.रा.बी.निगम आदर्श अस्पताल।
4. संकायाध्यक्ष, क.रा.बी.निगम चिकित्सा महाविद्यालय/दंत्य महाविद्यालय/नर्सिंग महाविद्यालय, स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान एवं अनुसंधान संस्थान।
5. निदेशक, निदेशालय(चिकित्सा)दिल्ली/ निदेशालय(चिकित्सा)नोएडा ।

विषय : राजभाषा कार्यान्वयन सुझाव पुरस्कार योजना वर्ष 2022-2023

महोदय/महोदया,

विदित हो कि निगम कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग के प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देने के लिए एक सुझाव पुरस्कार योजना लागू की गयी है। इस योजना के अंतर्गत हर वर्ष (01 अप्रैल से अगले वर्ष 31 मार्च तक) प्राप्त ऐसे सुझावों पर नकद पुरस्कार तथा प्रशस्ति पत्र देने की व्यवस्था है जिन्हें निगम के कामकाज में हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहन देने की दृष्टि से उपयोगी पाया गया हो। ऐसा प्रतीत होता है कि क्षेत्र इकाइयों में इस योजना का व्यापक प्रचार नहीं किया जा रहा है, परिणामस्वरूप इस योजना के अंतर्गत प्राप्त सुझावों की संख्या बहुत ही कम होती है।

अतः इस सुझाव पुरस्कार योजना की विस्तृत जानकारी पुनः इस अनुरोध के साथ प्रेषित की जा रही है कि कृपया इस योजना का व्यापक प्रचार करें :-

1. इस योजना में निगम के सभी अधिकारी तथा कर्मचारी (चिकित्सा और गैर-चिकित्सा) भाग ले सकते हैं। तथापि निगम कार्यालयों में तैनात हिन्दी कार्मिक इस पुरस्कार योजना में भाग नहीं ले सकेंगे।
2. एक सुझाव पर पुरस्कार राशि अधिकतम 3000/- रुपये और न्यूनतम 600/- रुपये होगी तथा प्रत्येक वर्ष कुल मिलाकर 12,000/- रुपये तक की राशि के पुरस्कार स्वीकृत किए जाएंगे।
3. सुझाव देने वाले अपने सुझाव, अपने संबंधित अधिकारियों के माध्यम से अथवा सीधे ही मुख्यालय की राजभाषा शाखा को भेजेंगे।
4. प्रत्येक वित्तीय वर्ष के दौरान प्राप्त सुझावों पर मुख्यालय में गठित मूल्यांकन समिति विचार करेगी तथा उसकी सिफ़ारिशों पर पुरस्कारों का निर्धारण किया जाएगा।
5. उपयोगी/ पुरस्कृत सुझावों का पुरस्कार पाने वाले कर्मचारी के नाम का उल्लेख करते हुए उचित प्रचार भी किया जाएगा।

भवदीय,

(हस्ताक्षर) 02/5/2022
(श्याम कुमार)
संयुक्त निदेशक (राजभाषा)

प्रतिलिपि :

1. मुख्यालय के सभी अधिकारियों/ शाखाओं को सूचना एवं समरूप कार्रवाई हेतु।
2. वेबसाइट सामग्री प्रबंधक को इसे निगम की वेबसाइट पर अपलोड करने हेतु।

(हस्ताक्षर) 02/5/2022
संयुक्त निदेशक (राजभाषा)

हिन्दी हेतु प्रोत्साहन योजनाओं से संबंधित कुछ अनुदेश

मुख्यालय/Headquarters
कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
क.रा.बी.नि. Employees' State Insurance Corporation
E.S.I.C. (Ministry of Labour & Employment, Govt. of India)

पंचदीप भवन, सी.आई.जी. मार्ग, नई दिल्ली-110002
PANCHDEEP BHAWAN, C.I.G. MARG, NEW DELHI-110 002
Website: www.esic.nic.in / www.esic.in

संख्या : ए-49/16/02/2020-रा.भा.

दिनांक : ~~18~~ 22 अप्रैल, 2022

सेवा में,

1. बीमा आयुक्त, राष्ट्रीय प्रशिक्षण अकादमी, द्वारका, नई दिल्ली।
2. अपर आयुक्त एवं क्षेत्रीय निदेशक/निदेशक/प्रभारी संयुक्त निदेशक/प्रभारी उप निदेशक, क्षेत्रीय कार्यालय/उप क्षेत्रीय कार्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम।
3. चिकित्सा अधीक्षक, क.रा.बी.निगम आदर्श अस्पताल/ क.रा.बी.निगम अस्पताल।
4. संकायाध्यक्ष, क.रा.बी.निगम चिकित्सा महाविद्यालय/दंत्य महाविद्यालय/नर्सिंग महाविद्यालय, स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान एवं अनुसंधान संस्थान।
5. निदेशालय(चिकित्सा)दिल्ली/निदेशालय(चिकित्सा)नोएडा।

विषय : कर्मचारी राज्य बीमा निगम इकाइयों में तैनात अधिकारियों द्वारा हिंदी में अधिकाधिक डिक्टेशन देने के लिए प्रोत्साहन योजना वर्ष 2021-2022

महोदय/महोदया,

राजभाषा विभाग की उपर्युक्त योजनानुसार जो अधिकारी वित वर्ष में हिंदी डिक्टेशन का अपेक्षित रिकॉर्ड रखते हैं वे इस योजना में भाग ले सकते हैं। हिंदी डिक्टेशन योजना के अंतर्गत कार्यालय प्रमुखों के साथ-साथ अन्य अधिकारी भी भाग ले सकते हैं। परंतु पिछले कुछ समय से यह देखने में आया है कि इस प्रोत्साहन योजना में निगम के बहुत कम अधिकारी भाग लेते हैं। प्रतिभागियों की संख्या सीमित होने के कारण योजना का उद्देश्य अधूरा रह जाता है।

अत: उक्त प्रोत्साहन योजना के व्यापक प्रचार-प्रसार की आवश्यकता है ताकि अधिक से अधिक अधिकारी इस योजना से परिचित हो सकें और उनमें हिंदी में काम करने और करवाने के प्रति रुचि उत्पन्न हो। इस योजना के अंतर्गत संबंधित अधिकारी द्वारा डिक्टेशन का रिकॉर्ड निम्नलिखित विहित प्रपत्र में रखा जाना अपेक्षित है :-

क्र.सं.	दिनांक	डिक्टेशन में लिखी गई पंक्तियों की संख्या	फ़ाइल संख्या	अभ्युक्ति

इस योजना के अंतर्गत क्षेत्र कार्यालयों (फील्ड यूनिट) के अधिकारियों (कार्यालय प्रमुख को छोडकर) के डिक्टेशन रिकॉर्ड की जांच संबंधित कार्यालय स्तर पर की जानी अपेक्षित है। इसमें विजेता अधिकारी को हिंदी भाषी एवं हिंदीतर भाषी वर्ग के अंतर्गत **₹ 5,000/- (पांच हजार रुपये केवल)** प्रत्येक को पुरस्कार देने की व्यवस्था है। इस प्रकार किसी कार्यालय में केवल दो पुरस्कार स्वीकृत किए जा सकते हैं।

उक्त पुरस्कार योजना के अंतर्गत स्वीकार्यता के लिए आवश्यक हिंदी डिक्टेशन कार्य की न्यूनतम संख्या प्रतिवर्ष 100 डिक्टेशन है। आशुलिपिक आदि संबद्ध न होने की स्थिति में हाथ से लिखी हुई पंक्तियां भी डिक्टेशन मानी जाएंगी। 10 पंक्तियों से कम के डिक्टेशन की गणना नहीं की जाएगी। इसके साथ न्यूनतम 10 नमूने भी प्रस्तुत करना अनिवार्य है।

अत: निवेदन है कि योजना के अंतर्गत सभी इच्छुक एवं पात्र कार्मिकों से आवेदन आमंत्रित किए जाएं और अपने कार्यालय स्तर पर आवश्यक कार्रवाई उपरांत पुरस्कृत अधिकारियों की सूची मुख्यालय भिजवाई जाए।

भवदीय,

22.4.2022

(श्याम कुमार)
संयुक्त निदेशक (राजभाषा)

प्रतिलिपि :

वेबसाइट सामग्री प्रबंधक को इस अनुरोध के साथ कि इस पत्र को क.रा.बी.निगम की वेबसाइट पर अपलोड करें।

22.4.2022

संयुक्त निदेशक (राजभाषा)

हिन्दी हेतु प्रोत्साहन योजनाओं से संबंधित कुछ अनुदेश

मुख्यालय/Headquarters
कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
क.रा.बी.नि. Employees' State Insurance Corporation
E.S.I.C. (Ministry of Labour & Employment, Govt. of India)

पंचदीप भवन, सी.आई.जी. मार्ग, नई दिल्ली-110002
PANCHDEEP BHAWAN, C.I.G. MARG, NEW DELHI-110 002
Website: www.esic.nic.in / www.esic.in

संख्या : ए-49/16/01/2022-रा.भा. दिनांक : 04 अप्रैल, 2022

08-अप्रैल, 2022

सेवा में,

1. बीमा आयुक्त, राष्ट्रीय प्रशिक्षण अकादमी, द्वारका, नई दिल्ली।
2. अपर आयुक्त एवं क्षेत्रीय निदेशक/निदेशक/प्रभारी संयुक्त निदेशक/प्रभारी उप निदेशक, क्षेत्रीय कार्यालय/उप क्षेत्रीय कार्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम।
3. चिकित्सा अधीक्षक, क.रा.बी.निगम अस्पताल/आदर्श अस्पताल।
4. संकायाध्यक्ष, क.रा.बी.निगम चिकित्सा महाविद्यालय/दंत्य महाविद्यालय/नर्सिंग महाविद्यालय, स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान एवं अनुसंधान संस्थान।
5. निदेशालय(चिकित्सा)दिल्ली/ निदेशालय(चिकित्सा)नोएडा।

विषय : निगम कार्यालयों में प्रचलित मूल हिंदी टिप्पण एवं आलेखन प्रोत्साहन योजना।

महोदय/महोदया,

भारत सरकार द्वारा आरंभ की गई मूल हिंदी टिप्पण एवं आलेखन प्रोत्साहन योजना निगम कार्यालयों में भी लागू है। यह योजना वित्त वर्ष पर आधारित है। इस योजना के अंतर्गत निम्नलिखित 10 पुरस्कार देने की व्यवस्था है:-

1. ₹5,000/- प्रत्येक की दर से 2 प्रथम पुरस्कार।
2. ₹3,000/- प्रत्येक की दर से 3 द्वितीय पुरस्कार।
3. ₹2,000/- प्रत्येक की दर से 5 तृतीय पुरस्कार।

पिछले कुछ समय से यह देखने में आया है कि इस प्रोत्साहन योजना में निगम कार्यालयों में भाग लेने वाले अधिकारियों/ कर्मचारियों की संख्या नाममात्र होती है। प्रतिभागियों की संख्या सीमित होने के कारण योजना का उद्देश्य पूरा नहीं हो पाता। अतः अनुरोध है कि उक्त प्रोत्साहन योजना का व्यापक प्रचार किया जाए ताकि अधिक से अधिक कार्मिक योजना से परिचित हो सकें और हिंदी में काम करने के प्रति आकर्षण उत्पन्न हो। इस योजना के अंतर्गत पुरस्कार प्राप्त करने हेतु निम्न विहित प्रपत्र में रिकॉर्ड रखा जाना अपेक्षित होता है। इसकी शेष शर्तें पूर्ववत हैं।

श्री/ श्रीमती/ कुमारी ______________________ पदनाम ______________________ द्वारा माह ______________________ के दौरान हिंदी में किए गए कार्य का विवरण।

क्र. सं.	तिथि	हिंदी में किए गए कार्य की फ़ाइल एवं रजिस्टर संख्या	हिंदी में लिखे गए टिप्पण/आलेखन के शब्दों की संख्या	हिंदी में किए गए अन्य कार्य		नियंत्रण अधिकारी के हस्ताक्षर (सप्ताह में एक बार)
				विवरण	शब्दों की संख्या	
1	2	3	4	5	6	7

निवेदन है कि योजना के अंतर्गत सभी इच्छुक एवं पात्र कार्मिकों से आवेदन आमंत्रित किए जाएं और पुरस्कृत कार्मिकों की सूची मुख्यालय भिजवाएं।

भवदीय,

08/4/2022

(श्याम कुमार)
संयुक्त निदेशक (राजभाषा)

प्रतिलिपि :

वेबसाइट सामग्री प्रबंधक को इस अनुरोध के साथ कि इस पत्र को क.रा.बी.निगम की वेबसाइट पर अपलोड करें।

08/4/2022

संयुक्त निदेशक (राजभाषा)

आपकी प्रतिक्रियाएँ

'पल्लवी का नौवां अंक मिला। आकर्षक साज–सज्जा और चित्रों ने पत्रिका के सम्पूर्ण कलेवर को विशेष बना दिया है। सभी लेख और कविताएँ रुचिकर और खास हैं। पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए संपादक मण्डल को बधाई।

अंकिता बनर्जी
उप निदेशक (रा.भा.)
पश्चिम अंचल, क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई

कार्यालय भवन की भव्यता को दर्शाता मुख–पृष्ठ एवं आंतरिक पृष्ठों में बहुरंगी कलेवर ने पत्रिका को आकर्षक बना दिया है। सूचनात्मक आलेख 'महामारी में क.रा.बी.नि. के प्रयास' एवं संस्मरणात्मक लेख 'सियाचिन–ग्लेशियर की याद' के साथ–साथ 'सबर रखो एक दिन ये इंतजार जीतेगा', पटना कलम चित्र शैली, शोक का अधिकार एवं सफलता का मूल सहित सभी रचनाएँ स्तरीय हैं। बॉल पेन की नोक से बनाए गए चित्र सुंदर हैं। संपादक मण्डल को साधुवाद।

मनोकामना है कि आपकी पत्रिका अनवरत् 'पल्लवित' रहे।

(मनोज कुमार)
उप निदेशक (प्रभारी)
उप क्षेत्रीय कार्यालय सूरत

इस रचनात्मक और सुरुचिपूर्ण पत्रिका के प्रकाशन हेतु आपका साधुवाद। आपके विभाग से संबंधित जानकारी के अलावा आपने विभिन्न लेख और समसामयिक जानकारी राजभाषा हिन्दी के माध्यम से उपलब्ध करवाई है इससे हिन्दी में कार्य करने के प्रति लोग प्रेरित और प्रोत्साहित होंगे तथा सरकारी कामकाज में हिन्दी का प्रयोग निरंतर बढ़ेगा। कामना है कि आपकी यह पत्रिका आधिकारियों और कर्मचारियों द्वारा हिन्दी में अधिक से अधिक कार्य किए जाने के प्रेरणा का स्रोत बने और पत्रिका निरंतर प्रगति करती रहे।

(विमलेन्द्र पाल सिंह भदौरिया)
सहायक निदेशक (रा.भा.) एवं सदस्य सचिव
नौवहन महानिदेशालय, नराकास, मुंबई–उत्तर

पत्रिका का यह विशेषांक सराहनीय है, कृपया प्रतिक्रिया सादर स्वीकार करें।

बधाई, पल्लवी के नियमित प्रकाशन एवं 9वें अंक की सफल प्रस्तुति हेतु।

प्रशंसनीय : पत्रिका में रक्षा राजपुरोहित, आशीष शर्मा, आस्था कान्त, पवन कुमार तिवारी, मोहन सोन्नेकर, श्वेता राणा, अमित कुमार, शिखा दुबे, रेणु खरे, अमृता कुमारी, मुकेश भुर्तिया एवं आसीमा नाज की रचनाएं

आकर्षक : पत्रिका के भीतरी मुखपृष्ठ पर साहिर लुधियानवी की रचना प्रासंगिक है, इससे बढ़िया संपादकीय कौशल अभिव्यक्त हुआ है।

पृष्ठ –36 पर रिशिका कालोनिया द्वारा बॉल–पेन का कमाल तो लाजवाब है, बेहद करीने से काले रेशमी धागों से उकेरी गयी सी प्रतीत होती, कलम के नोंक की जादूगरी, सच में प्रशंसनीय है।

विशेष : श्री राहुल परदेशी के आलेख 'महामारी में क.रा.बी.निगम के प्रयास के द्वारा निगम प्रशासन और निगमकर्मियों के श्रम को दर्शाया गया। निश्चय ही लेख प्रेरणादायी और सराहनीय है।

सुझाव : रिक्त स्थानों का उपयोग करते हुए प्रेरक–प्रसंग या सूक्तियाँ शामिल की जा सकती हैं। प्रशंसनीय रचनाकारों के उत्साहवर्धन हेतु इस पत्र की प्रति भेंट की जा सकती है।

संपादक मंडल को इस पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाईयाँ

(भावना पाटील)
सहायक निदेशक
प्रभारी राजभाषा अधिकारी
उप क्षेत्रीय कार्यालय नागपुर

उप क्षेत्रीय कार्यालय, मरोल का लेखा-जोखा

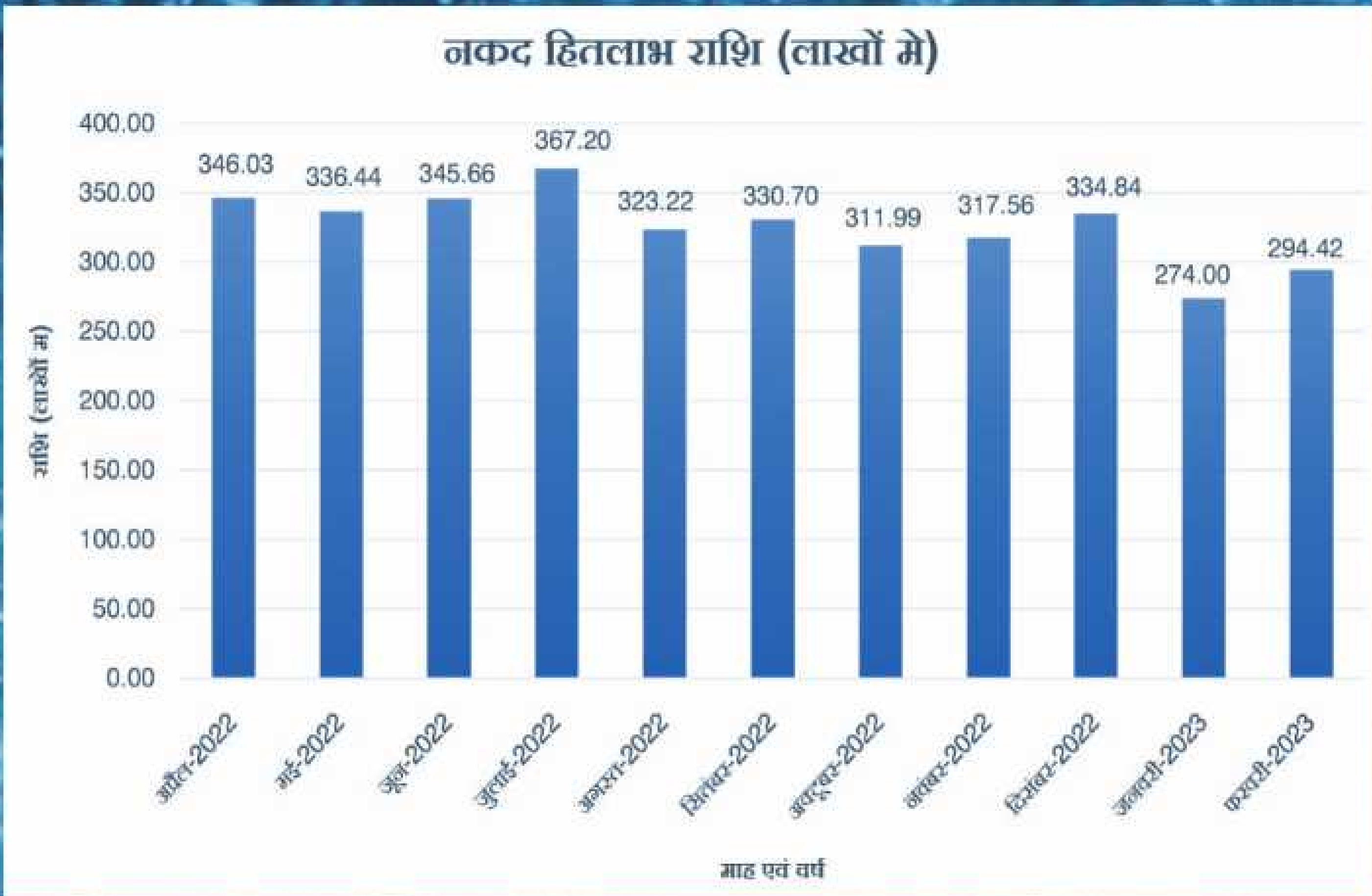

नरेश मेहता की जन्मशती पर

(15 फ़रवरी 1922– 22 नवंबर 2000)

मध्य प्रदेश के मालवा क्षेत्र के शाजापुर कस्बे में जन्मे ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित हिन्दी के यशस्वी कवि– कथाकार– आलोचक नरेश मेहता उन शीर्षस्थ लेखकों में से हैं जो भारतीयता की अपनी गहरी दृष्टि के लिए जाने जाते हैं।

विडम्बना

सत्य की शोध में
मैंने उस दिन अपने सम्पाती को भेजा
सूर्य ओर
और वह जाने किन आकाशों से
टूटकर लौट आया।
उसे विनेत्र देख
मैंने कहा
सत्य आग्नेय है।
उसे झुलसे देख
मैंने कहा
सत्य तेजस है।
उसे लौटे देख
मैंने कहा-
सत्य अप्राप्य है।
लोगों ने तपस्वी सम्पाती को नहीं
मुझे ऋषि कहा।

(तिलस्मी पक्षी सम्पाती के प्रतीक के माध्यम से कवि यह बताना चाहता है कि हम यथार्थ में रहते हुए वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ सत्य तक पहुँचें। यदि भ्रम की स्थिति में रहते हुए गलत तर्कों के सहारे कोई निष्कर्ष निकालते हैं तो वह मानव के हित में नहीं होगा एवं सत्य कभी भी सामने नहीं आएगा।)